اکتوبر و نومبر ۲۰۱۴ء/محرم ۱۴۳۶ھ

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفران مآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I.No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No.SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month
Annual Rs. 200/- Per copy-Rs. 40/-

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

OCTOBER-NOVEMBER 2014


مسجد محمود نگر پارک، اکبری گیٹ، لکھنؤ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अक्टूबर नवम्बर 2014 ई०

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

मुहर्रम नम्बर 1436 हि0

वर्ष 11 — अंक 4-5

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

प्रकाशक,मुद्रक एंव स्वामी सै0 कल्बे जवाद नकवी द्वारा निज़ामी प्रेस, अपोज़िट हसनैन मार्केट, विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ (उ0 प्र0) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, इमाम बाड़ा गुफ़रान मआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड चौक लखनऊ (उ0 प्र0) से प्रकाशित, सम्पादक सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी

Per Copy 40/- **Annual 200/-**

सम्पादन समिति

- डॉ० अमानत हुसैन नक़वी
- वासिफ़ अहमद नक़वी 'समीर'
- मौलाना महदी रज़ा, घोसी, मऊ
- मौलाना फ़ैज़ान जाफ़र अली
- इमरान आग़ा, लखनऊ
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- अतहर अब्बास आज़मी
- मिर्ज़ा मो० समद अब्बास
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- रेहान आलम, लखनऊ
- बिन्ते ज़हरा 'नदल हिन्दी'

- **ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई**
- **इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश**
- **कैफ़ तक़ी नक़वी, ब्यूरोचीफ़ देहली**

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

●●●

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- एक साल के लिए 200/-
2- पांच साल के लिए 800/-
3- लाईफ़ मिम्बरशिप 4000/-

fo'k; lwph

अक्टूबर-नवम्बर 2014ई०

ज़िलहिज्जा व मुहर्रम (मुहर्रम नम्बर) 1436हि०

न०	लेख व लेखक	पृष्ठ
1-	**egjZe dk lUns'k** सैय्यिदुल उलमा मौलाना सैय्यद अली नक़ी नक़वी ता०स०	3
2-	**laoq/ vkRek** सैय्यिदुल उलमा मौलाना सैय्यद अली नक़ी नक़वी ता०स०	8
3-	**ft Klt qk** मौलाना तक़ीयुल हैदरी साहब, फ़ैज़ाबाद	11
4-	**djcyk dh vkfjrlaus vius—** मोहतरमा अन्दलीब ज़हरा मूसवी	17
5-	**gq'Si fcu vyh dh eglurk vkS ge** मौलाना कौसर नियाज़ी साहब, पाकिस्तान	26
6-	**ulSgk** जनाब शौकत साहब	28
7-	**gq'Si vkS eluo t xr** प्रोफ़ेसर रघुपति सहाय "फ़िराक़" गोरखपूरी	29
8-	**bele gq'Sv0 fgUnw/leZdsni Zk ea** पण्डित श्री चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासू	31
9-	**nhu dh rdnhj** मोहतरमा बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी	39
10-	**Vs Mh vkQ+djcyk** जी० सी० सेमुएल	40
11-	**e[q; lekpkj** इदारा	43

मोहर्रम का सामान

y§kd %vk;rqYykfgy mtek lŞnq myekekSykuk lŞ;n vyh udh udoh
vuqokn %Jh fooHkwk.k oekZ lgk;d v/;kid ;knxkjs gqlSuh gk;j lsd.Mjh Ldwy bykgkckn

gqlS gqlS gqlS gqlS

कौन ऐसा होगा जिसने मोहर्रम के दिनों में यह ध्वनि न सुनी हो। इसके साथ–साथ कुछ लोग सिर और वक्ष पीटते हुये दृष्टिगोचर होते हैं। यह लोग हुसैन[अ0] का शोक मनाने वाले हैं। इनको अज़ादार कहा जाता है।

हुसैन[अ0] वह है जिन्होंने दसवीं मुहर्रम सन् 61 हि0 को निर्दयी शासन के अत्याचारों और अन्याय के विरूद्ध लड़कर संसार के इतिहास में सबसे बड़ा बलिदान किया। उन्हीं हुसैन की स्मृति सदैव जीवित रखने के लिए जो कुछ किया जाता है उसको अज़ादारी कहते हैं।

हुसैन[अ0] के बलिदान होने की घटना की स्मृति सदैव के लिये अन्याय से घृणा एंव निर्दयता, हटता क्रूरता और हिंसा के सामने सिर न झुकने की घोषणा है। जो आवाज़ हुसैन[अ0] ने अत्याचारियों तथा विधर्मियों के विरूद्ध उठायी थी वह उनकी अकेले की आवाज़ न थी वरन समस्त मानवता की आवाज़ थी न्याय, सत्य, धर्म और अल्लाह की यह आवाज़ समस्त संसार में प्रलय काल तक गूंजती रहेगी और सच्ची मानवता का संदेश देती रहेगी।

रोना

एक ऐसे अवसर पर अपने ध्यान को आकृष्ठ कीजिए जब एक महान आत्मा धारी मनुष्य एक उच्चकोटि पवित्र और महान से महान आदर्श की पूर्ति के लिये अन्यायी सेनाओं से घिरा हुआ है। उसके साथी इतने कम हैं कि उंगली पर सरलता से गिने जा सकते हैं। इसके विपरीत उसके शत्रु अगणित हैं। जिन्होंने इस पवित्रात्मा धारी व्यक्ति तथा उसके अबोध बालकों के लिये पानी बन्द कर दिया हो। तीन दिन की क्षुधा तथा तृष्णा में ये सत्य पर पर्वत की तरह अटल रहने वाले प्राणी एक एक कर के अपने सदस्य उत्साह तथा साहस को प्रकट करते हुये अपने जीवन को बलिदान कर रहे हों। पिता अपने कोमल अंग वाले पुत्र का शव उठा रहा हो, माता अपने प्यारे, युवक पुत्र को अपनी आंखों के सम्मुख भाले से आघात होते देख रही हो। बहनें अपने भाइयों को रक्त से लतपत देख रही हों। सुहागिनियों का सुहाग निर्दयता से उजड़ रहा हो पति की मृत्यु का शोक उनके हृदय को विदीर्ण कर रहा हो उनकी अन्तरात्मा से रामांचकारी चीखें निकल रही हों। निरअपराध अबोध अज्ञान बालक यहां तक कि छः माह का दूध पीता शिशु अपने पिता की गोद में अपने प्राण तड़फड़ाते हुये छोड़ रहा हो। शत्रुओं के तीर ने उसे मृत्यु शैय्या पर सुला देने के लिये विवश कर दिया हो, पिता इस दृश्य को वज्र सत्र ह्रदय करके देख रहा हो और रक्त की घूटें पी रहा हो।

उस समय यदि किसी मनुष्य में शेष मात्र भी मानवता होगी, कुछ भी सत्य का अंश होगा वह उस दृश्य को अपनी आंखों के सामने देखेगा

तो उसके हृदय में कौन सी भावना जागेगी? कितनी वेदना उत्पन्न होगी। इसका वर्णन करना अन्यन्त कठिन है। यदि वह ऐसी परिस्थिति में उनकी कुछ भी सहायता कर सकेगा तो करेगा चाहे उसे अपने प्राणों से हाथ धोना ही क्यों न पड़े और यदि किसी कारण वह उनकी सहायता करने से विवश हो तो क्या उसकी आंखों से आंसुओं की धारा न बह निकलेगी। अवश्य ही उसके दयावान नेत्र सजल हो उठेंगे। इसका अर्थ यह होगा, वह मनुष्य उस अमर शहीद के पवित्र चरणों में इन अश्रुओं को श्रद्वा तथा प्रेम के साथ अर्पण करता है। उसका साथ नहीं दे सकता यही मानवता के द्योतक तथा व्यक्ति समाज की मांग है कि वह एक ऐसे मनुष्य को जो सत्य पर अटल हो तथा एक उत्तम आदर्श की पूर्ति में महान संकट ग्रस्त हो देख कर उसकी सहायता करने से विवश रहने पर अपनी आंखों से दो बूँद आंसू बहाये। यह नहीं कि एक ओर तो वे अपार आपत्तियों से घिरे हों और दूसरी ओर उनकी दशा पर सहानुभूति रखने का दावा करने वाला दूर से खड़ा होकर मुस्कुरा रहा हो इस प्रसन्नता में कि वे लोग इतना बड़ा बलिदान देकर संसार में अमरकीर्ति के भागी होने जा रहे हैं।

ऐसा करने वाला मनुष्य बुद्वि तथा ज्ञान के समक्ष अपराधी होगा। और उसे ज्ञान तथा विचार में शून्य की उपाधि मिलेगी इसी तरह उन लोगों के बलिदान स्मरण कर और ऐसे संकटमय अवसर पर उनका साथ न दे सकने पर मनुष्य को रोना आयेगा, हंसी नहीं। घोर पश्चताप होगा, आनन्द नहीं। हृदय में एक दुःखदवेदना रूपी शूल चुभता मालूम होगा पुष्प की कोमल लड़ियों के स्पर्श का आनन्द नहीं प्राप्त होगा। इस कारण उनकी स्मृति को जगाने का केवल यही एक उपाय है कि शोक मनाकर उनकी आत्मा को शाान्ति प्रदान की जाये तथा मानवता का कर्म भी पुरा किया जाये।

यह कायरता नहीं वीरता है

आपत्तियों के आने पर आंसू बहाना वास्तव में कायरता है परन्तु सह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि युद्व के अवसर पर अपने प्राणों के डर से रो देना कायरता का चिन्ह हो सकता है परन्तु किसी ऊंचे लक्ष्य तथा आदर्श की रक्षा के लिये रण में लड़ने वाले का साथ देने का अवसर न होने के शोक में रोना ही वीरता की सबसे बड़ी पहचान है। यदि यह रूदन अपना इसी तरह सच्चा रोना रहे, केवल प्रवृत्ति तथा रिवाज बन कर न रह जाये तो एक ऐसी श्रेष्ठ भावना को जीवित रखने का सामान हो सकता है कि अगर अब भी सत्य और असत्य का सामना हो जाये तो सत्य के लिये हर बलिदान देने के लिये सदैव उद्यत रहें।

यह तो हुआ इसका दार्शनिक अंश। इसकी धार्मिक हैसियत यह है कि कुरआन में रोने का उल्लेख प्रशंसा के साथ मौजूद है। नबियों की रीति में रोना भी सम्मिलित है। स्वंय हजरत मोहम्मद साहब अपने चचा हज़रत हमज़ा के शहीद होने पर रोए थे इसके अतिरिक्त उन्होंने इमाम हुसैन[अ०] की शहादत की सूचना दी भी थी। उनको याद करके रोये भी थे और धर्माधिकारियों ने इसकी ताकीद भी की है कि मानवता और धर्म का यह संगम इस शोक के अमरत्व का उत्तरदायी है।

मजलिस

ऐसी सभा जिसमें इमाम हुसैन तथा उनकी महान आपत्तियों का वर्णन किया जाये मजलिस कहलाती है। इमाम हुसैन की शहादत के पश्चात मजलिसें व्यक्तिगत एंव सामूहिक रूप से होती हैं। आपत्तियों के मारे इमाम हुसैन के परिवार वाले जहां बैठ गये वहीं मजलिस हो गई। हज़रत मोहम्मद[स०] की संतान में जो इमाम हुसैन[अ०] के बाद हुये उनके यहां जो मजलिसें हुयी वे सब इसी तरह की थीं। जब भी उनके मित्र एक स्थान पर एकत्र हुये और इमाम हुसैन[अ०] की चर्चा चली,

सब लोगों ने मिलकर आंसू बहा लिये यह मजलिस हो गयी। जब कोई कवि आ गया जिसने उनकी जीवन गाथा पर कविता कही और पढ़ दी तो वह मजलिस हो गयी। कभी कभी इस सम्बन्ध में इस का भी प्रबन्ध किया गया है कि इमाम ने पर्दे के पीछे अपने घर की औरतों को बैठाया कि वे भी इसे सुनें।

इन मजलिसों में रूदन और विलाप होता था। रूदन की आवाज़ भी बलन्द होती थी। उस समय की परिस्थिति में इस से अधिक और कुछ भी न हो सकता था।

शनैः शनैः इमाम के संकटों और दुःखों के अतिरिक्त दूसरी बातें भी वर्णन की जाने लगीं। अब मजलिस जनता के सुधार और उनके ज्ञान को बढ़ाने का एक मन्त्र बन गया है। जिसमें प्रत्येक दशा में इमाम हुसैन पर रोना अत्यन्त आवश्यक होता है।

ताज़िया

यह इमाम हुसैन की समाधि का प्रतिरूप है, जो सोने चांदी, पीतल, लकड़ी और कागज़ से बनाई जाती है यह विशेषतः भारत की वस्तु है और कहा जाता है कि ताज़िये का उठाना तैमूरलंग के समय से प्रचलित है।

इमाम हुसैन[अ०] के रौज़े तक पहुंचना भारतवासियों के लिये प्रायः कठिन है। अतः उनके चरणों में अपनी भावनाओं को इसी ढंग से अर्पित किया जाता है। चूंकि ताज़िया करबला की सूरत है इस कारण उसे बड़े आदर के साथ रखा जाता है।

अलम

''अलम'' का अर्थ है झंडा। करबला में इमाम हुसैन के पताकाधारी हज़रत अब्बास थे और अलम के कारण सब के अन्त में इमाम हुसैन ने हज़रत अब्बास को लड़ने की आज्ञा दी थी। जिस शान से हज़रत अब्बास[अ०] ने अपने झंड़े की रक्षा अंतिम सांसों तक की उसका उदाहरण अन्यत्र मिलना अत्यन्त कठिन है सहस्त्रों का सामना अकेले किया परन्तु अलम कन्धे पर रहा। दाहिना हाथ कट गया तो बायें हाथ मे ले लिया। जब बायां हाथ कट गया तो झंड़े को सीने से लगा कर दोनों कटी हुयी भुजाओं से संभाला मगर गिरने नहीं दिया। हाँ जब आप स्वंय भुमि पर गिरे तो अलम भी पृथ्वी पर गिरा। यही अलम का महत्व है। जिसके कारण अलम अज़ादारी का अंग बन गया है। यह एलान है इस बात का कि जो झंड़ा करबला के रण क्षेत्र में गिरा था। वह अब भी नहीं झुका और हुसैनी संघ उस झंड़े को ऊंचा रखने का उत्तरदायी है। अलम हमारे हुसैन की सहायता न कर सकने के महान खेद का चिन्ह है और उन से घृणा का द्योतक है जिन्होंने इमाम हुसैन के साथ ऐसा अमानुषिक तथा निर्दयता का दुर्व्यवहार किया। यह अलम हमारे शोक में युद्व की भावना जागृति करता है। कि हम असत्य, अन्याय अनीत तथा अहिंसा का दृढ़ता से सामना करने को सदैव उद्यत रहें।

मश्क

इस अलम के साथ कभी कभी एक छोटी सी मशक भी लटकती रहती है। उसमें एक वांण लगा हुआ दिखायी देता है। यह मशक तथा तीर उस दुःखद घटना की याद दिलाते हैं। जब पताका धारी हज़रत अब्बास[अ०] हुसैन के बच्चों के लिये पानी लेने सरिता के तट पर गये थे। इस प्रकार ध्वजा वाहक के साथ–साथ पानी पिलाने वाले का कर्तव्य भी पूरा किया। इस प्रयत्न में वे इस हद तक सफल हुये कि सहस्त्रों की सेना को पराजित करके पानी भर लिया लेकिन खेद है कि वह अपार संकटों को झेल कर मिला हुआ जल शिविर तक न पहुंच सका। हज़रत अब्बास का रक्त भी बहा और एक तीर मश्क में भी लगा जिससे पानी भुमि पर बह गया। रक्त के बहने से नहीं किन्तु जल के बह जाने से हज़रत अब्बास हताश हो गये अलम तथा मशक सहित घोड़े से भूमि पर आ गिरे और वीर गति पाई। इस मश्क तथा अलम का अब तक साथ है।

ताबूत

यह एक ऐसा बाक्स होता है जिसमें शव उठाया जाता है। इराक और ईरान में प्रायः सन्दूक में उठाया जाता है। भारत में भी उत्तर प्रदेश के कुछ भागों विशेषतया लखनऊ में शव उठाने की यह रीति प्रचलित है। इतिहास से विदित होता है कि इसलाम में सर्व प्रथम हज़रत फ़ात्मा ज़हरा[स०] (मोहम्मद साहब की सुपुत्री) की अर्थी उनकी स्वेच्छा के अनुसार ताबूत में ही उठायी गई थी। उनके अनुयाइयों में भी यह रीति अभी तक प्रचलित है।

इमाम हुसैन[अ०] की अज़ादारी में ताबूत का अंग उसी खेद जनक घटना की याद दिलाता है कि करबला में इमाम हुसैन की अर्थी जनाज़ा नहीं उठ सकी, क्योंकि आप की शहादत के पश्चात उन हृदयहीन निर्दयी शत्रुओं ने आप के परिवार को बन्दी बना कर कूफे (इराक़ की प्राचीन राजधानी) तक गली गली घुमाया और इमाम हुसैन[अ०] के पवित्र शव को खुले मैदान में प्रचन्ड धूप में छोड़कर चले गये उसके तीसरे दिन बनी असद के गोत्र वालों ने आपको उसी स्थान पर दफ़्न कर दिया। इस घटना की याद सदा ताबूत से जीवित रहती है।

दुलदुल

मोहर्रम के जलूस के साथ–साथ और कभी मजलिस के समाप्त होने पर एक घोड़ा निकाला जाता है जिसकी पीठ श्वेत वस्त्र से आवरित रहती है, उस श्वेत वस्त्र पर लाल रंग की छींटें पड़ी हुयी दिखायी देती हैं जो कि रक्त की छींटों के चिन्ह को सूचित करती हैं। घोड़े के एक तलवार तथा एक तीर भी लटका रहता है। उसी घोड़े को दुलदुल या ज़ुलजनाह कहते हैं। ज़ुलजनाह इमाम हुसैन के घोड़े का नाम था। जिस पर सवार होकर आपने करबला में जिहाद[(1)] किया था। जब इमाम हुसैन लड़ते लड़ते बलिदान हो गये तो यह घोड़ा अपने मस्तक पर रक्त भरकर इमाम हुसैन[अ०] के शिविर पर यह प्रगट कराने आया था कि इमाम हुसैन[अ०] ने अपने उत्तम आदेश की सुरक्षा में अपने प्राणों की आहुति दे दी।

गहवारा या झूला

यह करबला के बहुत बड़े शहीद अर्थात सबसे अल्पायु वीर अली असग़र की दुःखद घटना की याद को सदैव–जीवित रखता है। यह झूला इस बात की याद दिलाता है कि इमाम हुसैन ने अपने छः महीने के दूध पीते प्राणों से भी प्यारे बच्चे को भी सत्य की रक्षा में मौत के हाथों अर्पित कर दिया।

इसके साथ साथ यह उन कठोर हृदय वाले रूपी शत्रुओं के अमानुषिक कार्यों का प्रतीक है जिनके द्वारा उस नन्हें शिशु को जिसको हुसैन इस लिये अपने साथ लाये थे कि कदाचित बच्चे को देखकर शत्रुओं के हृदय में मानवता तथा दया की किरण फूट पड़े और अपने को वे समझे कि हम किस मार्ग पर चल रहे हैं, उससे दूर हट जायें, जो प्यास के मारे अपनी सूखी जिहा को अधरों पर फेर रहा था उसको भी इस भय से कि कहीं हमारी सेना हमारे हाथ से न निकल जाये तीन फलों वाले तीरों से मारा फलतः उस नन्हें से सुकुमार बालक की गर्दन कट गई तथा इमाम हुसैन की एक भुजा भी छिद्रित हो गयी।

सबील

मोहर्रम के जुलूस निकलने के समय जिस मार्ग से जलूस निकलता है उस मार्ग के दोनो ओर बहुत से लोग घड़ों में पानी भर कर रख देते हैं उसके पास अनेकों कुल्हड़ पानी पीने के लिये रखे रहते हैं। ये घड़े तथा कुल्हड़ इस बात की याद दिलाते हैं कि जब इमाम हुसैन तथा उनके साथी धर्म युद्ध में तल्लीन थे। उस समय उनके साथी, जिसमें बालक तथा महिलायें भी सम्मिलित थीं तीन दिन से प्यासे थे उन्हें किसी प्रकार जल नहीं मिल रहा था वह प्यास सच मुच उनके

---

(1)किसी उत्तम तथा उच्च तथा आदर्श तथा सत्य की रक्षा के लिये लड़ना या प्रयत्न करना। इस शब्द का अर्थ है 'प्रयत्न'

प्राणों की प्यास हो रही थी लेकिन फिर भी वे अपने कर्त्तव्य पथ से विचलित न हुये अपने समस्त साथियों के साथ पवित्र विचारों के लिए बलिदान हो गये प्रत्येक व्यक्ति जो पानी पिये वह इमाम हुसैन[अ0] तथा उनके साथियों को याद करें जो कि जल तृष्णा से छटपटाते हुये प्राणों के लिये मरकर अमरत्व को प्राप्त हुये।

मेंहदी

इसकी रीति केवल भारत में ही है। करबला में इमाम हसन[अ0] (इमाम हुसैन[अ0] के बड़े भाई) की स्वेच्छा से ठीक दसवीं मोहर्रम को इमाम हसन के लड़के क़ासिम को रण क्षेत्र में भेजते समय अपना दामाद बनाया। इस प्रकार ऐसी संकटमय दशा में शोक की एक और रेखा को बढ़ा दिया। ब्याह इस्लाम में कोई उल्लास का अवसर नहीं वरन एक पवित्र कर्त्तव्य की पूर्ति है। ब्याह के समय मेंहदी लगाना यह केवल भारत की ही प्रणाली है। भारतवासियों के शब्दों में वह क़ासिम अपने हाथ मेंहदी से रंग कर अपने प्राणों को न्योछावर कर संसार में सदा के लिये अमर हो गये। इसी प्रकार अन्य रीतियाँ भी हैं जो भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में प्रचलित हैं।

मोहर्रम के जुलूस में इन समस्त सामग्रियों के प्रयोग का तथ्य यह है कि हम उस इमाम हुसैन की स्मृति को सदैव जीवित रखें जिन्होंने सत्यपथ से भटके हुये मानव के अज्ञान रूपी अंधकार को सूर्य बन कर विनष्ट किया अपवित्र विचारों के गहरे गर्त में पड़े हुये पापात्माओं को अपने बलिदान का सहारा देकर उन्हें विस्तृत एंव प्रकाशमय मैदान में खींचा। हमें जाग्रति जो अत्याचार अन्याय, असत्य तथा अधर्म का दृढ़ता के साथ सामना करने का साहस देती है। उस इमाम हुसैन की अमर कीर्ति संसार में सर्वदा जगमगाती रहेगी। इस के साथ साथ उन पर क्रुरता तथा दानवता का व्यवहार करने वाले अत्याचारियों के दुर्विचारों तथा दुष्कृत्यों को सदा घृणा से देखते रहेंगे और इमाम हुसैन तथा उनके साथियों की रोमांचकारी, हृदय विदारक मृत्यु पर महान शोक मनाते रहेंगे। और कहते रहेंगे हाय हुसैन! हम न हुये हाय हुसैन! हम न हुये।

संसार के भिन्न भिन्न देशों ने अपनी रीतियों के अनुसार करबला की घटना को अपने रंग में रंग लिया है। परन्तु वास्तविक उद्देश्य सब का एक ही है।

(इमामिया मिशन लखनऊ प्रकाशन नं0 118 चतुर्थ एडिशन, 1312 हि0)



¼ts u0 10 dk cfd;k-----------------½

इसी संतुष्ट आत्मा के प्रतीक व लक्षण थे जो आंखों के सामने आ रहे थे ओर अब मक़ातिल और इतिहास के पन्नों पर हमारे समक्ष हैं।

यही संतुष्ट आत्मा है जिसे दुश्मन तक की निगाह ने महसूस किया, उस समय जब आप ज़ख़्मों से चूर, बहत्तर दाग़ दिल पर और अनगिनत तीर, नैज़े व तलवार के ज़ख्म जिस्म पर खाये हुए जंग के मैदान में शहादत की मंजिल से क़रीब से क़रीब तर हो रहे थे तो दुश्मन ने उस समय भी कोई ऐसी ख़ास खुसूसियत महसूस की जिसकी गवाही तबरी की तारीख में अब तक सुरक्षित है कि मैंने कोई ऐसा इंसान नहीं देखा जो ज़ख्मों से चूर हो और जिसके अज़ीज़ और दोस्त क़त्ल हो चुके हों और वह हुसैन अ0 से अधिक संतुष्ट नजर आता हो।

यह थे हुसैन अ0 जो बिला शक उस महान संतुष्ट आत्मा के धारक थे कि जब इन तमाम मुश्किलों और मुसीबतों के कठिन रास्तों को तय करते हुए अपने पैदा करने वाले की बारगाह के सामने पंहुचे तो खुद खुदा स्वागत के तौर पर आवाज़ दे कि ''ऐ संतुष्ट आत्मा (नफ्से मुतमइन्ना) अपने पालने वाले की ओर पलट आ, ऐसी हालत में कि मैं तुझसे राज़ी और तू मुझसे राज़ी हो जा अतएव तू मेरे खास बन्दों में शामिल हो जा और मेरी जन्नत में दाखिल हो जा।''

जो सूर–ए–फ़ज्र की आखिरी आयत है और इसी लिए यह सूरा हुसैन के सूरे के लकब से मशहूर है।



संतुष्ट आत्मा

y§kd%vk;rqYykg vy mtek l¸;nq myek ekSykuk vyh udh udoh

संतोष की विशेषता के विपरीत असंतोष है असंतोष दिमाग़ में भी होता है और दिल में भी और इन दोनों के नतीजे में फिर अमल में भी।

दिमाग़ की बेचैनी यह है कि इंसान की राय डांवाँडोल हो कभी कुछ सोचे और कभी कुछ और दिल की बेचैनी यह है कि सही फ़ैसले तक पंहुच जाने के बाद उसकी हिम्मत हिचकोले खा रही है, कभी उसे जोश आता हो और कभी अंजाम के डर से उसकी हिम्मत पस्त होने लगती हो।

और इन सबके नतीजे में अमल में जो बेचैनी होती है उसमें शामिल है अमल में उतावलापन, घबराहट की बातें, कथनी और करनी में परस्पर विरोध और अमल में अनिश्चितता आदि की निशानियाँ।

बेचैनी के जितने पहलू हैं उनके विपरीत इत्मीनान के पहलू हैं। विचार में स्थिरता फिर इरादे में स्थिरता, कार्य में ठहराव और हर कार्य को सही समय पर बिना किसी जल्द बाज़ी के पूरा करना और खतरों की सख़्ती से कदमों का न डगमगाना।

असल में धैर्य, स्थिरता और कदम में ठहराव सब इसी संतुष्ट आत्मा के विभिन्न रूप हैं।

अब संतोष और असंतोष के इन पहलुओं के लिहाज़ से जब हम कर्बला के मुजाहिद हज़रत इमाम हुसैन[अ0] के चरित्र पर शुरू से आखिर तक नज़र डालते हैं तो उसमें संतोष का हर रूख़ इतना पूर्ण नज़र आता है कि ''संतुष्ट आत्मा'' का शब्द जैसे इसी चरित्र पर पूरा उतरता है।

आइये इनमें से एक–एक पहलू को लें और इसके एतबार से शहीदों के सरदार (सय्यदुश्शोहदा[अ0]) की सीरत का अध्ययन करें।

दिमाग़ का संतोष यानि अपनी राय पर जमे रहना और याद रखना चाहिए कि इस जगह पर जब राय के शब्द का प्रयोग करते हैं तो आम लोगों की ज़बान में उन अक़ायद और मुसल्लमात से परे होकर जिन पर निश्चित दलीलों की बुनियाद पर हज़रत इमाम हुसैन अ0 की मन्सबी हैसियत से हमारा विश्वास है, मगर एक उच्च स्तर के व्यक्ति की हैसियत से प्रत्येक धर्म और समाज के व्यक्ति से जब हज़रत इमाम हुसैन अ0 का परिचय कराना हो तो उस समय ''राय'' ही का शब्द इस्तेमाल करना पड़ता है।

राय की स्थिरता प्रकट के समय से होती है? जब से वह हालात पैदा हुए जो धीरे–धीरे इतिहास की गति को कर्बला की घटना तक लाये। वह हज़रत इमाम हसन अ0 की सुलह और ख़ास शर्तों के अधीन आपका ज़ाहरी हुकूमत से अलग होना और शाम के शासक के क़ब्ज़े का तमाम इस्लामिक देशों पर मय इराक़ व हिजाज के स्थापित हो जाना है।

मालूम है कि इमाम हसन[अ0] की फ़ौज के अधिकतर लोग इस सुलह से सहमत न थे। और जैसे रसूले खुदा[स0] की सुलह पर जो आपने हुदैबिया में मुश्रिकों के साथ फ़रमाई थी, बहुत से नामनिहाद मुसलमान नाराज़ थे। उसी प्रकार

उस सुलह से जो इमाम हसन[अ०] ने शाम के शासक (अमीर मुआविया) के साथ फ़रमायी थी, बहुत से नामनिहाद शिया नाराज़ थे और एक वर्ग में यह प्रोपेगण्डा भी था कि छोटे भाई की इस सुलह से सहमति नहीं रखते, इस मौक़े पर तबरी से भी अधिक प्राचीन इतिहासकार अबूहनीफ़ा दीनवरी की किताब ''अल–अख़बारूत्तेवाल'' की यह रवायत बड़ी अहमियत रखती है कि इमाम हसन[अ०] की फौज के चन्द अहम सरदार इमाम हुसैन[अ०] के पास आए और कहा कि हज़रत इमाम हसन[अ०] को इस सुलह का जो उन्होंने की है पाबन्द रहने दीजिए और आप हमारा नेतृत्व कीजिए और हम एकदम शाम पर हमला कर दें फिर देखिएगा कि मुआविया को किस प्रकार पराजित करते हैं हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने इसका ऐतिहासिक उत्तर दिया उसका विषय यह है कि अब अमीरे शाम (शाम का शासक) की ज़िन्दगी तक चुपचाप बैठे रहो उसके बाद फिर मुझसे कुछ कहना।

यह है अमीरे शाम की ज़िन्दगी के अन्त से बीस वर्ष पहले की बात अब अमीरे शाम की ज़िन्दगी का अन्त रजब सन् 60 हि0 में होता है और बस हुसैन[अ०] का वह महान काम जो दस मुहर्रम सन् 61 हि0 को आपके बलिदान पर पूरा हुआ। शुरू हो जाता है तो क्या हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के इस जवाब में जो बीस साल पहले दिया गया था, स्पष्ट उस भविष्य की जो इसके बीस साल बाद आने वाला था खबर न थी और क्या यह आपकी डांवाडोल न होने वाली स्थिर राय का ऐसा सबूत नहीं है जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता।

फिर जब से अमीरे शाम ने यज़ीद की बैअत के लिए कोशिश शुरू की, आपने जो बैअत से इन्कार फ़रमाया, किसी क्षण भी उसमें कोई हिचकिचाहट नज़र आई? हिचकिचाहट का एक मामूली असर यह हो सकता था कि आप अपने हमदर्दों को जमा करके परामर्श ही लेते कि मुझसे बैअत का मुतालबा हो रहा है, आप लोगों की क्या राय है? तब किसी हद तक यह समझा जा सकता था कि आपको परिस्थितियों की नजाकत के कारण हिचक है मगर कोई कमज़ोर से कमज़ोर रवायत भी ऐसा नहीं बताती।

इस बुनियादी समस्या का क्या ज़िक्र? बैअत से इन्कार के बाद जो कार्य शैली आपने अपनाई है उस में भी आपने लोगों से कभी कोई परामर्श नहीं किया। कुछ लोग सचमुच की या दिखावे की हमदर्दी से खुद ही आ आकर तरह–तरह की राय देते रहे जिन्हें आपने विभिन्न प्रकार के उत्तर देकर टाल दिया और जो कार्य शैली खुद अपनाई उसमें ज़र्रा भर भी परिवर्तन नहीं किया।

इससे दूसरा अंश दिल का इत्मीनान भी ज़ाहिर है अर्थात् जो कार्य शैली निश्चित की तो उससे न किसी दोस्त की दोस्ती से हटे और न किसी दुश्मन की दुश्मनी के दबाव से और परिणाम स्वरूप कार्य में जो स्थिरता एंव संतोष आपसे ज़ाहिर हुआ उसकी कोई मिसाल नहीं मिलती।

दिल की बेचैनी की निशानियों में सबसे पहला दर्जा यह है कि हर काम उतावलेपन से किया जाए।

हज़रत इमाम हुसैन[अ०] पहले दिन से समझे हुए हैं कि मुझे मौत की नदी में तैरना है मगर जो मौत को यक़ीनी तौर से दिल में ठाने हुए हैं वह अक्ल और शरीअत के क़ानून की हिफ़ाज़त के लिए जान के बचाने के तरीक़े भी अपना रहा है। कभी मक्के में पनाह लेकर और कभी हज के मौके पर मक्के को छोड़ कर और कभी कर्बला पंहुचने के बाद सुलह की शर्तें पेश करके और यहां तक कि आशूर के दिन हुज्जत तमाम करने के लिए खुतबे पढ़कर और उस समय की प्रतीक्षा करके जब जंग की शुरूआत उधर से हो।

अमल मे यह ठहराव बिना आत्मा की पूर्ण शान्ति व संतोष के हो ही नहीं सकता।

फिर घबराहट की बातें और बयान में परस्पर विरोध, इसकी कोई बनी उमैया का इतिहासकार भी कभी आपकी और निस्बत न दे सका।

हालांकि जंग की नीति के तहत शरीअत के कानून में भी किसी हद तक वाकेआत को छुपाने की इजाज़त दी गयी है मगर आपने दोस्त और दुश्मन किसी के सामने भी वास्तिविकता पर पर्दा डालने की कभी कोशिश नहीं की यहां तक हज़रत मुस्लिम व हानी की शहादत की खबर जो आपके साथियों से पर्दे में रही थी आपने खुद अपनी एक तहरीर द्वारा सब पर ज़ाहिर कर दी और अपने साथियों को इजाज़त दे दी कि वह आपका साथ छोड़कर चले जायें जिससे आपके साथ का मजमा जो रास्ते में बहुत हो गया था तितर–बितर हो गया और वही थोड़े से लोग रह गये जो मक्के साथ साथ आये थे मगर आप न पहले इससे डरे और न बाद में इस परिणाम के सामने आने पर परेशान हुए बल्कि जैसे और आपने संतोष की सांस ली कि अब मेरे कारनामें में वह झोल नहीं आ सकता जो नाकिस साथियों की वजह से आ सकता था और वही किरदार आशूर की रात तक कायम रहा, जब दुश्मन की ओर से हमला हो जाने के बाद आपने एक रात की मोहलत हासिल करके फिर अपने साथियों को अपना साथ छोड़कर चला जाने की इजाज़त दी। यह और बात है कि अब मजमा ख़ालिस अफ़राद का था इसी लिए उन्होंने इस इजाज़त से फ़ायदा उठाने की कोशिश नहीं की। मगर तबरी की रवायत के अनुसार जब एक व्यक्ति जहाक बिन अब्दुल्ला मशिरिकी ने इस हद तक इजाज़त से फ़ायदा उठाया कि इन्होंने कहा कि मैं आपके साथ उस समय तक रहूंगा जब तक जंग छिड़े और आपकी मदद भी करूंगा मगर फिर इसके बाद जब सिवा जान देने के कोई मन्ज़िल न रहेगी तो मैं अलग हो जाऊंगा, तो आपने प्रसन्न चित्त से इसकी अनुमति दे दी और उन्होंने ऐसा ही किया। आशूर के दिन आपकी नुसरत में जंग भी की और कुछ दुश्मनों को क़त्ल भी किया और फिर वादे के अनुसार आपसे विदा होना चाहा तो आपने ऐसे संकट के समय में भी उनका क्षण भर रोकने का प्रयास नहीं किया। यह चरित्र (किरदार) एक ऐसे ही संतुष्ट आत्मा का हो सकता है जिसका नाम इतिहास की ज़बान में ''हुसैन[अ0]'' के सिवा कोई और नहीं है।

अमल में ''हिचकिचाहट'' राय में हैरत का नतीजा होता है यहां जिस तरह अस्ल मामले में हज़रत इमाम हुसैन[अ0] ने कभी किसी से कोई परामर्श नहीं लिया उसी तरह पूरे कारनामे में कार्य शैली के किसी अंश तक में कोई एक अवसर कभी ऐसा नहीं आया कि आपने दोस्तों और रिश्तेदारों को जमा करके पूछा हो कि मुझे क्या करना चाहिए। यहां तक कि हमला हो जाने के बाद भी आपकी ओर से उपदेश ही उपदेश, आदेश ही आदेश मिलते हैं, और साथियों, दोस्तों और रिश्तेदारों की तरफ से पालन ही पालन। जैसे बहत्तर आदमी सब अंग थे ओर उनमें काम करने वाला दिल एंव दिमाग सिर्फ एक था, जिसका नाम है ''हुसैन[अ0]'' जिसमें क्षण भर भी कोई घबराहट नहीं है ताकि उसे सहारा देने के लिए किसी और दिल व दिमाग़ इरादे व हिम्मत के काम करने की आवश्यकता हो।

कर्बला के ऐसे मुसीबतों के भयानक कोलाहल में रिश्तेदारों और दोस्तों में से हर एक के साथ इमाम हुसैन[अ0] का बर्ताव, हर एक के अधिकारों का ख्याल, हर एक के मरतबे का ख़्याल करते हुए इस्लाम के बराबरी (मसावात) के सिद्वान्त की सुरक्षा ईश्वर के अधिकारों एंव मानवाधिकारों के छोटे–छोटे अंश तक का लिहाज़, शहीदों का क्रम, हर एक के रूखसत और शहादत के समय उसकी प्रतिष्ठा के अनुसार ग़म के असर के ज़ाहिर करने को जो वास्तव में उस शहीद के कद्र व मरतबे के मुताबिक थे फिर आगे कुरबानी पेश करने की तैयारी, यह सब

¼cfd;k is u0 7 ij-------------½

जिज्ञासुता

mnZwy§kd %ek§kukrdh;g gSjhlkgc] fiziUiy olhdk vjchdkWys QSktkckn
vuqokad %lS;n tkQj+ vlj udoh] tk;lh

उसका नाम 'केली ब्राउन' था। वह अमेरिका का निवासी था। उसे भारत आए हुए लगभग एक मास हो गया था। इस बीच वह भारत के अधिकांश ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण कर चुका था। बाल्यवस्था से ही उसे देशाटन की अभिरूचि रही है और यही अभिरूचि उसे अमेरिका जैसे दूर देश से भारत ले आई थी और आजकल उसका निवास कलकत्ता जैसे महानगर में था वैसे तो उसने भारत के वातावरण को भली भांति देखा और समझा था, परन्तु जब से कलकत्ता पहुंचा था उसने एक विचित्र दृश्य देखा।

लोग सड़कों पर ढोल बजाते, अंग्रेज़ी बाजों के समूह के साथ कुछ तलवारें कुछ लाठियां लड़ते, मदिरा के नशे में मस्त, अपने मुख से भांति भांति के स्वर उच्चारित करते नूतन वस्त्र पहिने नेत्रों में सुरमा लगाए, फूलों से लदे हुए मिलते––और कुछ व्यक्ति बड़े बड़े चिन्हों, पुष्पों से सुसज्जित ताबूत और घोड़ा सजाये कागज की बड़ी बड़ी मीनारें जैसी वस्तु लिए, नंगे सिर नंगे पैर जलती हुयी सड़क पर काले वस्त्र पहने हुए दृष्टि गोचर हुए। उनमें से अधिकांश व्यक्तियों के नेत्रों से अश्रु धाराएं भी प्रवाहित देखीं। अधिकांश व्यक्ति तेज़ बलड़ या छूरियों से अपना वक्षस्तल अथवा पीठ भी घायल कर लेते जिसके परिणाम स्वरूप उनके शरीर से अधिक मात्रा में रक्त निकल जाता परन्तु इसके पश्चात भी वे अपने उद्देश्य की पूर्ति में शान्त हृदय के साथ लवलीन रहते।

केली को जब यह दृश्य निरन्तर कई दिन तक दिखायी दिया तो उसने एक दिन एक बंगाली बाबू से अत्यन्त भाव पूर्ण अंग्रेज़ी में प्रथम व्यक्तियों के समूह के विषय में पूछा ''ये कौन लोग हैं और क्यों इस प्रकार उछल कूद कर प्रसन्नता का प्रदर्शन कर रहे हैं?'' बंगाली बाबू को इस विषय में अधिक ज्ञान न था इस कारण उन्होंने अपर्याप्त उत्तर दिया ये लोग मुसलमान हैं आज कल इन लोगों का त्योहार चल रहा है जिसको मोहर्रम कहते हैं''––सह सुन कर केली चुप होगया––

दूसरे दिन केली ने दूसरे व्यक्तियों के समूह को देखा जो अपनी छाती कूटता एक लम्बी चौड़ी सड़क से जा रहा था। केली की जिज्ञासा जागृत हुई और उसने निकट खड़े हुए एक चीनी से पूछा, ''यह लोग कौन हैं और क्यों इस प्रकार अपने को हताहत करते हैं?''

चीनीः– ''यह लोग मुसलमान हैं इनका त्योहार है जिसको मोहर्रम कहते हैं, यह लोग कुछ दिनों तक प्रति वर्ष यही किया करते हैं।''

केली ने जब यह सुना तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक समूह कल था जो दूसरे

रंग में था और आज यह दूसरे रंग में हैं फिर भी उस बंगाली ने उन्हें भी मुसलमान बताया था और यह इनको भी मुसलमान कहता है। यह किस प्रकार सम्भव है कि एक धर्म के लोग एक ही त्योहार में कभी अपने को शोकातुर बना लें और कभी इस प्रकार प्रसन्नता का प्रदर्शन करें। कुछ क्षण तक वह यही सब विचार करता रहा फिर उसने उसी चीनी से कहा——

केलीः——''परन्तु कल तो यह बहुत प्रसन्न थे इन के साथ बैंड बाजे और ढोल ताशे थे कल तो यह इस प्रकार अपने शरीर को काट नहीं रहे थे कल यह प्रसन्न थे आज रो रहे हैं क्या बात है?''

चीनीः——''नहीं ये वे लोग नहीं हैं जिन्हें आपने कल देखा था।''

केलीः——''मैंने एक सज्ज्न से पूछा था वे उन लोगों को भी मुसलमान ही बता रहे थे।''

चीनीः—''हां, वे लोग भी मूसलमान हैं और ये लोग भी।''

केलीः—''तो फिर कल वैसे और आज इस प्रकार क्यों?''

चीनीः—मुसलमानों मे दो पार्टी हैं, यह दूसरी पार्टी थी।''

अभी इतनी ही बात हुई थी कि जुलूस आगे बढ़ गया। चीनी को भी कहीं जाना था उसने भी आगे बढ़ कर जाना चाहा तो केली ने कहा, ''आप ने एक विचित्र बात बताई है, क्या इसको सविस्तार नहीं बता सकते?''

चीनीः—''सम्पूर्ण विवरण तो मैं स्वय भी नहीं दे सकता, हां जितना ज्ञान है अवश्य बताउंगा।''

केलीः—''तो आइए किसी होटल में बैठ कर बातें करेंगे।''

ये लोग पास ही के एक होटल की ओर बढ़े। मार्ग में जितना समय लगा दोनों में से एक ने भी कोई बात नहीं की। कदाचित इसका कारण यह रहा हो कि इस बीच केली किसी विचार में खो गया था। जब यह दोनों होटल की एक केबिन में बैठ लिए तो चीनी ने वार्तालाप का प्रारम्भ किया—

चीनीः—''अब जब कि अधिक समय से हम लोग निकट हैं, यह आवश्यक है कि कुछ परिचय हो जाये।''

केलीः—''मूझे केली ब्राउन कहते हैं, मैं अमेरिका का निवासी हूं देशाटन की अभिरूचि में यहां आया हूं।''

चीनीः—''मुझे सिचियाँग कहते हैं, मैं हूँ तो चीनी परन्तु यहां एक भारतीय नागरिक हूं। और यहीं रहता हूं।

इस अपर्याप्त परिचय के पश्चात केली ब्राउन ने कुछ जलपान का आर्डर दिया और तुरन्त ही सिचियाँग से विवरण बताने को कहा।

सिचियाँगः— ''हां तो जैसा मैंने प्रथम आप से कहा था कि मुसलमानों में दो सम्प्रदाय हैं और वे दोनों ही मुसलमान कहलाते हैं। प्रन्तु रचनात्माक रूप से वे एक दूसरे से विभिन्न हैं एक मोहर्रम में प्रसन्नता का प्रदर्शन करता है और एक शोक प्रकट करता है।''

केलीः—''परन्तु इसका कारण क्या है जब कि दोनो का एक ही सुधारक है, क्या दोनों का प्रास्पेक्टस अर्थात कुरआन विभिन्न हैं?''

सिचियाँग :—''नहीं, मैंने एक मुसलमान पन्डित से पूछा था, वह कहता था कि नहीं, हम दोनों का कुरआन एक ही है।''

केलीः—''तो फिर इस मतभेद की परिस्थिति का कोई कारण समझ में नहीं आता।''

सिचियाँग :—''मैं बताता हूं। यह मतभेद आज का नहीं वरन जैसा कि मुझे ज्ञात है यह मतभेद मोहम्मद साहब के जीवन ही से आरम्भ हुआ।, परन्तु उनका यह मतभेद उस समय शक्तिशाली हुआ, जब मोहम्मद साहब का देहान्त हो गया और एक कमेटी के द्वारा कुछ मुसलमानों ने उनका एक पदाधिकारी चुन लिया परन्तु थोड़े से मुसलमानों को यह बात अप्रिय लगी।''

केलीः— ''क्यों? ऐसा क्यों हुआ? जब जन मत द्वारा यह निर्वाचन हो गया तो उनमें फूट क्यों पड़ी?''

सिचियाँगः— ''वे कहते थे कि मोहम्मद साहब ने स्वयम् अपने जीवन में 'अली' को अपना पदाधिकारी घोषित कर दिया था जो उनके दामाद एंव चचेरे भाई भी थे और जिन्होंने मोहम्मद साहब के समय के समस्त युद्धों में प्रकट रूप से कार्य किया था।''

केलीः— ''अच्छा, फिर?

सिचियाँगः— तो बस वहां से ही इस्लाम की दो शाखांए हो गईं, एक ने उस निर्वाचित व्यक्ति को पदाधिकारी माना, दूसरे ने अली को, फिर यह कम चलते चलते अली से उनके छोटे पुत्र ''हुसैन'' तक पहुंचा और उधर का कम 'यजीद' तक पहुंचा परन्तु 'हुसैन' और 'यजीद' में परस्पर एक महायुद्ध हुआ।''

केलीः— ''क्यों? इस यद्ध का कारण क्या हुआ?''

सिचियाँगः— ''कहा जाता है और मेरा व्यक्तिगत अन्वेषण भी यही बताता है कि यजीद एक भोग विलास का प्रेमी व्यक्ति था। इस्लाम के वे सिद्धान्त जिन पर मुसलमानों को गर्व है वह उनको नष्ट कर देना चाहता था, परन्तु हुसैन इस्लाम धर्म के प्रचारक के नाती थे जिनके पिता, नाना तथा भाई सभी ने अपना सम्पूर्ण जीवन इस्लाम के विकास के सम्बन्ध में व्यतीत किया था और अनेको कष्ट उठाये थे इसी के कारण हुसैन इस्लाम का विनाश होते न देख सके।''

केलीः— ''यजीद इस्लाम धर्म के सिद्वान्त को कैसे नष्ट करना चाहता था?''

सिचियाँगः— ''यही कि वह स्वम् मदपान को उचित समझता था धर्म का वैभव उसके समक्ष तुच्छ था नृत्य एंव संगीत से उसको अधिक रूचि थी——और इसी प्रकार की अनेकों बातें।''

केलीः— ''तो एसे व्यक्ति के रिफार्मर होने का तात्पर्य क्या? उसको किसने मोहम्मद साहब का पदाधिकारी बनाया?''

सिचियाँगः— ''उसको उसके पिता 'मुआविया' ने अपना पदाधिकारी नियुक्त किया था क्यों कि 'यजीद' के पूर्व वही खलीफा था।''

केलीः—''यह मुआविया कौन था और कैसे खलीफा बना?''

सिचियाँगः—''रसूल का जो तीसरा पदाधिकारी घोषित किया गया था वह 'बनी उमय्या' का एक Candidate था, उसने एक स्थान का गवर्नर 'मुआविया' को बना दिया था जिस स्थान का नाम शाम (सीरिया) है। जब चौथा पदाधिकारी अली को बनाया गया तो उन्होंने यह प्रिय नहीं किया कि 'मुआविया' का गवर्नर रहे। परिणाम में दोनों में परस्पर युद्ध भी हुआ। परन्तु कुछ मुसलमान अली को ओर और कुछ मुआविया को मोहम्मद साहब का खलीफा मानते रहे परन्तु यह बात आश्चर्यजनक है कि आज के मुसलमान दोनों को मोहम्मद साहब का ख़लीफा मानते हैं और उनका आदर करते हैं परन्तु यह वही मुसलमान हैं जो मोहर्रम में प्रसन्नता का प्रदर्शन करते हैं परन्तु शोकातुर मुसलमान केवल अली को मानते हैं। तो जब 'मुआविया' अपनी आन्तिम अवस्था को पहुंचा तो उसने अपने कुपुत्र 'यजीद' को अपना ख़लीफा नियुक्त कर दिया।''

केलीः— ''अच्छा तो वह तीसरा पदाधिकारी कौन था।''

सीचियांगः— ''हजरत उस्मान 'उमवी'।''

केलीः— ''परन्तु यह हजरत उस्मान कैसे पदाधिकारी बने।''

सीचियांगः—''इनको दूसरे खलीफा हजरत उमर ने अपना पदाधिकारी घोषित किया था।''

केलीः—''अर्थात?''

सीचियांगः— ''जब दूसरे खलीफा की अन्तिम घड़ी आयी तो उन्होंने एक कमेटी बनायी और उनको यह अधिकार दिया कि उन में से किसी एक को अपना रिफारमर चुन लें, अतः उन्होंने 'उस्मान' को चुन लिया।''

केलीः— ''और दूसरे को सम्भवतः पहला घोषित कर गया होगा?''

सीचियांगः— ''हां! ऐसा ही हुआ था।''

केली :—''अच्छा तो यह कम इस प्रकार है, उधर से यजीद आया, इधर से हुसैन गये दोनों में युद्ध छिड़ा, फिर क्या हुआ?''

सीचियांगः—''हुसैन का बध कर ड़ाला इस कारण एक गिरोह रोता है।''

केलीः—''और यजीद विजयी हुआ इस कारण दूसरा गिरोह हंसता है?''

सीचियांगः—''हां प्रत्यक्ष रूप से तो यही बात समझ में आती है परन्तु वे इस बात से इनकार करते हैं अपितु अपनी प्रसन्नता के अन्य कारण बताते हैं।''

केलीः— ''वे क्या कारण हैं?''

सीचियांगः— ''वे कहते हैं कि उस दिन खुदा के भेजे हुए अनेकों पैगम्बरों ने आपत्ति से मुक्ति पायी है। उदाहरणार्थ यह कि 'आदम'[1] की क्षमा याचना स्वीकार की गयी। हजरत नूह की नौका 'जूदी' पत्थर पर आकर रूकी 'नमरूद'[2] के द्वारा जलाइ गयी अग्नि उस समय पुष्पों की वाटिका बन गयी जब इब्राहीम उसमें फेंके गये। इत्यादि इत्यादि।

केलीः—''यह लोग बहुत समय पहले गुजरे हैं और हुसैन बाद में। अतः इससे उसका क्या सम्बन्ध?''

सीचियांगः—''हां वे महापरूष इस्लाम के पैगम्बर से शताब्दियों पूर्व हुए हैं।''

केलीः—''तो मुसलमान अपने पैगम्बर के नाती का बध किये जाने पर नहीं रोता वरन् अन्य पैगम्बरों की मुक्ति पर प्रसन्न होता है, कितनी व्यंगपूर्ण बात है।

सीचियांगः— ''हां है तो बड़ी विचित्र बात। अच्छा मूझे आज्ञा दीजिए अब मैं चलूंगा।''

केलीः— ''अभी आप से बहुत कुछ पूछना था, अच्छा कोई समय और दीजिए, मुझको इससे अधिक रूचि हो गयी है।''

सीचियांगः— ''आप का निवास यहां किस स्थान पर है?''

केलीः— ''मैं ग्रांड होटल, कमरा नम्बर 26 में ठहरा हूं।''

सीचियांगः— ''अच्छा तो कल प्रातः एक बजे मैं मिलूंगा।''

फिर यह दोनों अन्तिम वाक्यों के पश्चात विदा हो गये।''

8 बज चुके थे प्रन्तु अब तक सीचियांग नहीं आया था और केली व्याकुलता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था कि सहसा वह दृष्टिगोचर हुआ। उसने शुभागमन कर उसका स्वागत किया और तुरन्त बैरे को बुला कर चाय मंगाई फिर प्राथमिक वार्तालाप के पश्चात उन दोनों में जो वार्तालाप हुई उसका आरम्भ इस प्रकार हैः—

केलीः—''हां तो यहां तक बात पहुंची थी कि वे मोहर्रम की दसवीं को अन्य पैगम्बरों के कल्याण का दिन समझते हैं।''

सीचियांगः—''हां''

केलीः—''परन्तु यदि वे ऐसा समझते हैं तो फिर यह लाठी एंव तलवार और लड़ना भिड़ना क्या?''

सीचियांगः—''वे इन्हीं बातों में हुसैन की स्मृति को भी सम्मिलित करते हैं।''

केलीः—''स्मरण करने का यह ढ़ंग विचित्र है—अच्छा तो वह अन्य पार्टी वाले जो रोते हैं तो ताबूत तथा घोड़ा इत्यादि लेकर क्यों चलते हैं?''

सीचियांगः—''देखिए, समय से याद आया आज ही का दिन वह दिन है जिस दिन हुसैन[अ०] का बध हुआ और आज एक बहुत बड़ा जलूस निकलेगा, जो रोने वालों का होगा——आइये यदि समय हो तो चलिए वहीं प्रत्येक वस्तु के विषय में

---

(1)इश्वर की ओर से इस संसार मे मनुष्यों के कल्याण के लिये अनेकों महापुरूष आये जिन्हें पैगम्बर कहते हैं। ये तीनों पैगम्बर उन्हीं महापुरूषों में से थे। इनमें प्रथम हजरत आदम थे और अन्तिम मोहम्मद साहब।

(2)एक पापी और हथ्यारा राजा जिसने ''इब्राहीम'' को इस कारण जला देना चाहा था कि उन्होंने उसकी प्रतिज्ञा भंग की थी और उस पर यह स्ष्पष्ट किया था कि ईश्वर तुम नहीं वह है, जिसने तुम को भी जन्म दिया है। अनूवादक

आपको ठीक ठीक बता दूंगा।''

केलीः— ''हां,हां यह तो अत्यन्त हर्ष की बात है, मैं रात भर इन्हीं समस्त बातों के विषय में विचार करता रहा, क्या ही अच्छा होता कि मुझे इतिहास के अध्ययन का अवसर मिलता और मैं यह सब कुछ भली भांति जान सकता, मुझे इतिहास से कभी रूचि नहीं रही परन्तु यह सब सुनने के पश्चात मन करता है कि इतिहास का गहन अध्ययन करूँ।''

यह कहकर वह उठा और साथ हो लिया। उस समय लगभग 9 बजे होंगे। कलकत्ता का वह महान जुलूस एक चौड़ी सड़क से आगे बढ़ता हुआ मिला। लगभग ढ़ाई लाख व्यक्ति अपने हृदय में विभिन्न प्रकार के विचार लिए उसे देखने में व्यस्त थे और एक शोकातुर पार्टी के लोग नोहा पढ़ने, छाती पीटने और रोने धोने में व्यस्त थे केली और सिचियाँग भी एक उच्च स्थान पर खड़े हो गये। उसी समय केली की दृष्टि एक सुसज्जित घोड़े पर पड़ी और उसने पूछा——

केलीः—''यह क्या है एक घोड़े को लोग इस प्रकार क्यों सजाए हुए हैं?''

सिचियाँगः—''इसे यह लोग अपनी भाषा में 'ज़ुलजनाह' अथवा 'दुलदूल' कहते हैं। यह उस घोड़े की आकृति है जिस पर 'हुसैन' लड़ने के लिए युद्धस्थल में गये थे।''

केलीः—''इस पर बाण क्यों लगा रखे है?''

सिचियाँगः—''हुसैन पर वाणों की वर्षा की गयी थी अतः कुछ वाण घोड़े के भी लगे थे।''

केलीः—''इसका मस्तक क्यों लाल है?''

सिचियाँगः—''जब हुसैन[अ०] शहीद (अमर) हो गए तो उनके अमरत्व का समाचार घोड़े ने इस प्रकार दिया कि अपने मस्तक को हुसैन के रक्त से लाल किया और शिविर तक दौड़ता हुआ पहुंचा और इस प्रकार हुसैन[अ०] के बध का समाचार इनके शिविर तक पहुंचा।''

केलीः—''तो क्या हुसैन[अ०] के साथ और लोग जो लड़ रहे थे यह समाचार नहीं ला सकते थे?''

सिचियाँगः—''ओहो! एक बहुत बड़ी बात तो मैं आप को बताना भूल ही गया वह यह कि पुस्तकों से यह बात भली भांति स्पष्ट हो जाती है कि हुसैन की सेना का प्रत्येक व्यक्ति अकेले लड़ता था अन्त में हुसैन भी अकेले ही लड़ने गये थे।

केलीः— (आश्चर्य से) ''अरे! तो क्या यज़ीद की सेना का भी एक एक सैनिक अकेले लड़ने आता था ? यह ढ़ंग तो बड़ा विचित्र है।

सिचियाँगः—''नहीं। इधर के एक सैनिक के मुकाबले में उधर की समस्त सेना रहती थी।''

केलीः—''फिर तो इधर के प्रत्येक सैनिक का जाते ही बध कर डाला जाता रहा होगा ?''

सिचियाँगः—''नहीं! यही तो आश्चर्य की बात है कि इधर का प्रत्येक सैनिक जो भी रणक्षेत्र में जाता था सैकड़ो का बध करता था। आप सम्भवतः यह समझ रहे होंगे सेना में कोई लाख दो लाख आदमी थे परन्तु आप को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि हुसैनी सेना में कुल बहत्तर व्यक्ति थे (जिसमें कुछ वृद्ध, कुछ बालक, कुछ स्त्रियां तथा एक दूध पीता बच्चा भी था——अनुवादक) इस बात पर सभी इतिहास वेत्ता सहमत हैं। यज़ीद की सेना का प्रथम आक्रमण वाणों की वर्षा के रूप में हुआ था, परिणाम स्वरूप हुसैन की सेना के अधिकांश व्यक्ति उसी समय हताहत हो गए जो शेष रहे थे वे बारी बारी लड़े।''

केलीः—''यह तो विश्व का विचित्र युद्ध हुआ कि मुट्ठी भर व्यक्ति टिड्डी दल सेना के मुकाबले पर तत्पर हो गये।''

सिचियाँगः— ''और यह सुन कर तो आप को भी आश्चर्य होगा कि हुसैन[अ०] की सेना का प्रत्येक व्यक्ति तीन दिन का भूका और प्यासा था। फिर भी उस सेना के प्रत्येक सैनिक ने यजीद की सेना के छक्के छुड़ा दिये वह देखिए—(संकेत करते हुए) सामने जो लोग कुछ व्यक्तियों को पानी पिला रहे हैं यह हुसैनी तृष्णा की ही स्मृति है।''

अभी यह वार्तालाप हो रही थी कि जुलूस

कुछ आगे बढ़ा और अब जो वस्तु उन लोगों के सम्मुख रूकी वह एक 'अलम' था जिसकी ओर केली ने संकेत करते हुए पूछा–''यह ध्वजा के सामने क्या है?''

सिचियाँगः–''यह हुसैन के सेनापति का चिन्ह (पताका) है, उसका नाम 'अब्बास' था वह हुसैन का छोटा भाई था और इसमें जो एक मश्क (चमड़े का बर्तन जिसमें जल भरा जाता है) लगी है वह वही है जिसे लेकर अब्बास 'फुरात' नदी के घाट तक गये थे यह वीर हुसैनी सेना का सबसे बलवान था जिसको प्रत्येक इतिहास वेत्ता ने बड़ा बलवान बताया है।''

केलीः–''तो क्या यह हुसैन[अ०] की सेना तक जल ले आया था?''

सिचियाँगः–''नहीं! यह उस घाट तक तो पहुंच गया था जिस पर लाखों का पहरा था। उसने मश्क भी पानी से भर ली थी परन्तु लौटते समय यज़ीदी सेना ने उसे घेर लिया अन्त में भीषण युद्ध हुआ उस बलवान की दाहिनी भुजा कट गयी। उसने बाएं हाथ से मश्क संभाली, जब वह हाथ भी कट गया तो अपने दान्तों से मश्क को संभाला। अन्त में एक बाण आकर मश्क पर पड़ा। पानी बहने लगा, जल के प्रवाहित होते ही उसकी शक्ति भी क्षीण हो गयी और हृदय खंडित होगया उसके शरीर पर अनेकों घाव पड़ चुके थे इस कारण वह घोड़े से गिर पड़ा और कुछ समय के पश्चात उसने दम तोड़ दिया।''

केलीः–''वे लोग बड़े निर्दयी थे, बड़े कायर कि सब मिलकर एक अकेले से युद्ध करते थे।''

फिर केली इस प्रकार समस्त वस्तुओं के विषय में पूछता रहा और सीचीयांग सविस्तार वर्णन करता रहा। अन्त में जब उसके सामने एक ताबूत आया तो उसने पूछा–''यह क्या?क्या इसमें कोई शव है?''

सीचियांगः–''नहीं। यह हुसैन के शव की आकृति है। इन लोगों का कथन है कि हम अपने इमाम की अर्थी उठाते हैं इस कारण कि करबला में उनकी अर्थी न उठ सकी, यह उसी की स्मृति है।''

केलीः–''अर्थात?''

सिचियाँगः–''जब हुसैन का बध कर ड़ाला गया तो अब उनकी सेना में कोई शेष न था, एक पुत्र था वह भी रोगी परन्तु वह भी बन्दी बना लिया गया था इस कारण हुसैन की अर्थी न उठ सकी थी अतः यह उसी की स्मृति है।''

केलीः–''वे लोग बड़े अत्याचारी थे और मुझे आश्चर्य होता है कि इसके अतिरिक्त भी वे मुसलमान कहलाते हैं। अपने पैगम्बर के नाती के साथ ऐसा दुर्व्यहार करने वाला कदापि मनुष्य कहे जाने का भागी नहीं हो सकता इस्लाम तो एक शान्ति प्रिय सम्प्रदाय है वह हमें भी प्रिय है। परन्तु जब उसमें इस प्रकार के भी व्यक्ति हों तो उसे विश्व के समस्त धर्म अपने से अलग कर देंगे।''

जुलूस अब आगे बढ़ गया था अतः इस कारण सिचियाँग ने केली से कहा–''अच्छा, अब तो मैं लगभग आपकी आवश्यक वस्तुओं के विषय में बता ही चुका हूं। और अधिक ज्ञान स्यम् भी नहीं है इस लिए अब मुझे आज्ञा दीजिए–यदि अवसर रहा तो फिर मिलूंगा।''

केलीः–''मैं तो कल अपने देश लौटकर जा रहा हूं , इस कारण यह भेंट अन्तिम ही समझो प्रिय मित्र! परन्तु तुम मुझे आजीवन याद रहोगे इस कारण कि तुमने विचित्र बात बताई है और वह ऐसी है जिसे संसार के प्रत्येक व्यक्ति को जानना चाहिए। मुझे इतिहास से कोई लगाव तो न था परन्तु मैं हुसैन जैसे महान व्यक्ति के इतिहास का अध्ययन अवश्य करूंगा जिस पर मानवता को गर्व है।''

फिर उन्होंने एक दूसरे का पता नोट किया और अन्तिम वाक्यों के पश्चात एक दूसरे से विदा हो गये––

दूसरे दिन केली हवाई जहाज पर बैठा ''हुसैन'' के विषय में सोच रहा था।

½cfd+k i s u0 25 i j----------½

करबला की औरतों ने अपने बुजुर्गों से क्या पाया?

elsgrjekvUnyhc t ejjkeqohfct uksfh

यह सवाल सभी को, खासकर मुसलमानों को सोच विचार कर बुलावा देता है कि कर्बला में हाशमी मर्दों और औरतों ने जो कारनामें पेश किये हैं वह उन से किस तरह बन पड़े, और उनकी अगुवाई में दूसरे मर्दों और औरतों ने कैसे ऐसी सेवायें की जिनकी नज़ीर और मिसाल मौजूद नहीं। हम भी इंसान है आखिर हमसे अमल के मोजिज़े या चमत्कार क्यों नहीं ज़ाहिर होते। हमारे सामने भी धर्म और पंथ पर जुल्म और अत्याचार की बिजलियां गिरायी जाती हैं, लेकिन हमारे दिल पर क्यों इतना असर नहीं होता, जैसा कि असर कर्बला के शहीदों और कूफे व शाम के कैदियों ने लिया जब वक्त पड़ता है तो हम कुछ भी नहीं होते। तो क्या कर्बला वाले इंसान न थे। उनकी काया हड्डी गोश्त से तैयार न हुयी थी उनकी निगाह में मौत क्यों बाग़ का एक खूबसूरत फूल बनी हुयी थी, जिसकी महक से दिमाग को मज़ा मिलता है और आंखें रोशनी पाती हैं। हमारी उंगली में अगर सूई चुभ जाती है, तो हम इतना बेचैन हो जाते हैं कि घर भर इस तकलीफ को महसूस करता है, फिर कर्बला के मर्दों और औरतों ने खुश–खुश ऐसी हौलनाक और भयानक मुसीबतों का कैसे सामना किया! आज सदियों के बीत जाने के बाद जिनकी चर्चा से हम में से बहुत दिल वाले बेहोश हो जाते हैं, या कम से कम आंसू बहाते हैं, बेक़ाबू हो के मुंह से चीख निकल जाती है और मातम के लिए सीने पर हाथ पड़ जाते हैं। यह वाक़िए इतने प्रभावशाली हैं कि शताब्दियों बाद भी उनका प्रभाव कम नहीं होता, नाव नदी में है और तूफानी लहरें कुछ पत्नियां, कुछ मायें, बहनें अपने वारिसों, बच्चों और नातेदारों को एक पर एक नदी में डूबते देख रही हैं। घर में आग लगी है उसमें एक बीमार, दुर्बल भी है जो खुद बीमारी का बिस्तर छोड़ नहीं सकता। छोटे–छोटे बच्चे हैं जिनके दामन से आग की लपटें उठ रही हैं, जिन लोगों ने यह दृश्य देखे बल्कि इनमें भाग लिया किस दिल दिमाग़ के रहे होंगे। शताब्दियों के बाद तारीख में देखते हैं और धटनाओं का असर हम को बेताब कर देता है और जब कभी समां बंध जाता है तो हममें भी सत्य की सहायता और बातिल से टकराव के लिये जिन्दगी न्योछावर करने की भावना पैदा हो जाती है।

किस्से कहानियों में भी हमने ऐसे इन्सानों की चर्चा नहीं सुनी जिनका ज्ञान इतना अधिक हो जिनका शिष्टााचार इतना ऊंचा हो जिनकी संस्कृति इतनी बलन्द हो जो खुदा के इतने गहरे प्रेमी हो, जो सत्य के ऐसे पुजारी हों जिनके दिल में मानवता का इतना दर्द हो और बड़े से बड़ा बलिदान करके डर, भय, दुःख, दर्द के बजाय, जिनके मुख मण्डल पर गौरव और टिकाऊ खुशी

की लहरें दौड़ रही हों। कहीं इल्म और अदब, ज्ञान और साहित्य है तो खुदा का डर नहीं, खुदा का डर है तो दिल में ताक़त नहीं, ज्ञान और बोध है तो दिल भी मज़बूत है तो ज़बान में ज़ोर नहीं। लेकिन कर्बला में जिस तरह जानमाजें आबाद नज़र आती हैं उसी तरह रणभूमि भी शेरों की डकार से कांप रही है, जैसे मर्द अपने कमाल दिखा रहे हों। औरतों से उनके कमाल ज़ाहिर हो रहे हों। ऐसा लगता है यह इंसान नहीं है फरिश्ते हैं। लेकिन हमने तो फरिश्तों के ऐसे कारनामें न पढ़े न सुने।

विशेषकर कर्बला की वीरांगनाओं (खवातीन) की जांबाजी और बलिदान हमारी अचरज का विषय बने हुये हैं अगर हम इस सवाल का जवाब कुछ ही शब्दों में हम देना चाहें तो यह कहेंगे कि कर्बला के ऐतिहासिक लोगों खासकर महिलाओं की तरबीयत या दीक्षा, उनके बुजुर्गों ने की ऐसी दीक्षा किसी अन्य को नसीब नहीं हुयी। यह समझ में नहीं आता कि यह खवातीन (महिलांए) ऐसा भयानक तूफान कैसे पार कर गयीं। खुदा का डर, उससे अगाध प्रेम, आजादी का मज़ा सच कहने का साहस, संतोष, खुदा की आज्ञा पर राज़ी रहना कर्तव्य बोध ज्ञान और योग्यता की जैसी मिसालें कर्बला वालों को अपने घर में मिली, न वह कहीं घरों में देखने को आती हैं, न पाठशालाओं में और पीरों फक़ीरों के हुजरों में जिस घर में मर्दों में हज़रत अबूतालिब, दीन दुनिया में दोनों में हमारे सरदार हज़रत पैगम्बर[सा०] हज़रत हमज़ा, जाफरे तैय्यार, हज़रत अली सरीखे बेनज़ीर इंसान हों और जिनके यश से माला माल होने वाले हज़रत सलमान फारसी, अबूज़र मिक्दाद मीसमेतम्मार, अम्मार यासिर हों, जिनके घर का सेवक क़म्बर सरीखा आरिफ, ब्रह्यज्ञानी हों, जिस घर में जनाब अब्दुल मुत्तलिब की बेटियां उर्दा और सफिय्या हों, जहां जनाबे आमिना और जनाबे फातिमा बिन्ते असद हों हजरत खदीजा, हजरत उम्मे सलमा हों जैनब बिन्ते हजश हों, जिस घर की वादियों में उम्मे ऐमन और फ़िज़्ज़ा हों उस घर में अगर हुसैन[अ०] के जैसे इमामत और इंसानियत के ताजदार और जनाबे ज़ैनब और उम्मे कुलसूम सरीखी खातून हों अगर वहां जनाब–ए–सकीना पैदा हो गयीं तो आश्चर्य क्या?

कर्बला के इन शहीदों ने बहादुरी और जियालेपन का प्रदर्शन किया तो वीरता और बहादुरी इनकी मौरूसी शक्ति थी क्या बद्र में हजरत अली के सिवा किसी और के हाथ में फौज की पताका थी क्या अरब के मश्हूर और सरनाम पहलवान वलीद को हज़रत अली की तलवार के सिवा किसी और ने कत्ल किया क्या जब हज़रत हमजः और शीवा में जंग हो रही थी और दोनों आपस में गुथ चुके थे उस वक्त हजरत अली के सिवा किसी और ने हज़रत हमजः की जान बचाई और वलीद को दो टुकड़े किये? हजरत अली के अलावा कौन था कि जिस की तलवार ने बद्र की जंग में 70 कुफ्फार को क़त्ल किया और 70 को बन्दी बनाया?

ओहद की लड़ाई में तलहः बिन आवरदी ने जब पुकार के कहा मुसलमानों! तुम्हारा विश्वास तो यह है कि हम तुम्हारी तलवार से जहन्नम में जाते हैं और तुम हमारी तलवार से जन्नत में जाते हो तो फिर मुसलमानों में कोई ऐसा है जो मुझे जहन्नम में भेजे या खुद जन्नत में चला जाये इस तन्ज़िया और व्यंगात्मक वाक्य से किस की त्योरी चढ़ी? किस की गैरत में उबाल आया! क्या अली के अलावा किसी और ने उसके घमण्ड भरे सर को धड़ से अलग किया। खैबर के रण में मरहब की खबर किसने ली! अम्र बिन अबदेवुद जो अरब स्तम्भ कहा जाता था जिस की गिन्ती हजार बहादुरों के बराबर होती थी उसके घमण्ड का नशः किसने उतारा क्या अली की तलवार ने अरब के इस खम्भे को ढा के अरब की जाहिलियत को ध्वस्त नहीं किया! हुनैन, तायफ़ जमल और सिफ्फीन में किस की तलवार का लोहा माना गया। क्या सिफ्फीन की लड़ाई में जहां बद्र,

उहद और खंदक की तलवार आखिरी बार चमकी लशकर के अनेक भाग इमाम हसन, इमाम हुसैन, मुस्लिम बिन अकील और अब्दुल्लाह बिन जाफर, मोहम्मद बिन हनफियः और मोहम्मद बिन अबीबक्र आदि के जिम्मे न थे। और क्या जमल, सिफ्फीन में हाशिमी बहादुर जंग की तारीख बना के कर्बला नहीं आये थे हजरत जाफरे तैय्यार की जीवन गाथा ने कर्बला में हजरत अब्बास[अ०] के सामने जीवन लुटा देने की इन्तिहाई मिसाल थी हजरत हमजः[अ०] का कलेजः निकाल के चबाये जाने और हजरत अली अकबर[अ०] के सीने में बरछी का फल लगने में कितनी समानता है और सजदे में हजरत अली[अ०] के सर पर वार होने और सजदे ही की हालत में हजरत इमाम हुसैन[अ०] का सर कलम हुआ कितनी मिलती जुलती घटना है क्या हरीर की रात में दोनों पक्षों की फौजों की पक्तियों के बीच हजरत अली की जानमाज का बिछना और कर्बला में हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की नमाज़े खौफ ऐसी ही दूसरी मिसाल नहीं है बहरहाल मर्दों के कारनामों की चर्चा विस्तार से नहीं करना है इतना तो बस इसलिए लिखा गया कि शिक्षा दीक्षा का पूरा चित्र आंख के सामने आ जाये।

ख़वातीन ने अपनी उस पीढ़ी को जो उन्हीं की जाति (सिन्फ) से थी क्या दिया और कर्बला की देवियों के कारनामों में उनकी माओं का क्या हिस्सा है, सरसरी तौर से हम को इस वक्त यही समझना है। कर्बला की दुनिया में कासिम और अली अकबर को हथियार सजा के मरने को भेजने के लिए याकूब[अ०] और इब्राहीम[अ०] ऐसे पैग़म्बरों के ताक़तवर दिलों की जरूरत थी कर्बला की वीरांगनाओं ने कांटो भरी राह बड़ी बलंद नफ़सी से तय किया।

कम देखा गया है कि गुरू से शिष्य आगे निकल गये हों लेकिन कर्बला की ख़वातीन ने अपनी माओं से जो गुन पाये थे उससे बढ़ के जौहर दिखाये उन्होंने मां की गोद से जो सीख ली थी उसे बहुत ज़्यादा फैला के दुनिया के सामने प्रस्तुत किया।

हज़रत ज़ैनब[अ०] और कर्बला की दूसरी ख़वातीन अपने कुनबे की जिन बुजुर्ग औरतों की जीवन गाथा और शिक्षा से असर ले सकती थीं उनमें हज़रत सफीयः, अब्दुल मुत्तलिब की बेटी की भी गिनती होती है। सफीयः मां की तरफ से हजरत ज़ैनब की परनानी और बाप की तरफ से परदादी थीं आप हज़रत पैग़म्बर[स०] और हज़रत अली[अ०] की फुफीं थी खंदक की लड़ाई में पैग़म्बर ने और औरतों को एक खास क़िले में रखा था हस्सान बिन साबित उनकी सुरक्षा के उत्तरदायी बनाये गये थे। जब एक यहूदी क़िले पर चढ़ा तो जनाब सफीयः ने हस्सान से कहा उठो इसे खत्म कर दो हस्सान ने जवाब दिया अगर मुझ में इतना ही दम होता तो मैं हुजूर[स०] के साथ जंग के मैदान में ही क्यों न होता सफीयः ने खुद ही यहूदी को तलवार का निशाना बनाया और हस्सान से कहा अच्छा अब इसका सर तो क़िले के बाहर यहूदियों की तरफ फेंक दो। हस्सान बोले मुझ से यह भी नहीं हो सकता खुद सफीयः ने दुश्मन का कटा हुआ सर यहूदियों में फेंका यही हज़रत सफीयः थीं जो जंगे उहद में मुसलमानों की भगदड़ के बाद बरछी हाथ में लिये दुश्मनों को मार रहीं थी। हज़रत हमज़ा उनके भाई थे भाई की शहादत के बाद सफीयः यह कहके कि मैं हमजः की लाश देखूंगी वह क़त्लगाह की तरफ चल दीं उनके बेटे जुबैर ने हज़रत पैग़म्बर को बताया हुजूर ने फरमाया कि उनको वहां न जाने दो वापस बुला लो क्योंकि हिन्द (यज़ीद की दादी) ने उनका सीना चाक करके कलेजा निकाल के चबा डाला ओर दूसरे अंग भी काट के मद्दे कर दिये गये थे सफीयः को जब पैग़म्बर का हुक्म बताया गया तो वह पूछने लगी कि मुझे वापसी का हुक्म क्यों मिला है मैंने सुना है कि दुश्मन ने क़त्ल के बाद मेरे भाई की सूरत बिगाड़ दी है मैं इसलिए जाती हूं कि वह करूणा जनक दृश्य देखूँ और सब्र करूं और खुदा से इसके बदले (अज्र) की हक़दार बनूं। जुबैर ने सफीयः

का पैगाम हुज़ूर की खिदमत में पेश किया फरमाया कि अच्छा जाने दो जनाब सफीयः ने सिर्फ असाधारण बहादुरी और धर्य संतोष ही की मिसाल नहीं छोड़ी है बल्कि अदब में भी अपनी जगह बनायी है हुज़ूर की वफात पर मरसिया कहके अपनी अदबीशान जाहिर की और मरसिये में सियासी व मज़हबी प्रतिरोध व्यक्त करके अपनी जिम्मेदारी से भी मुक्त हईं यह सब गुण बस हजरत सफीयः तक ही सीमित थे बल्कि हाशिमी खादान की कुल औरतों में कम या ज़्यादा पाये जाते थे जनाब सफीयः की दूसरी बहन ''अरदी'' जिन्दगी की आखिरी सांस तक अपने अक़ीदे और विश्वास की रक्षा के लिये जान से खेलती रहीं वह जबान से हुज़ूर की हमेशा मददगार रहीं उन्होंने अपनी खानदानी फसाहत बलागत (वाक्य कौशल) हक के लिए वक़्फ़ कर रखा था। उन्होंने अपने प्यारे बेटे तालिब को हज़रत पैग़म्बर की कुमक के लिए खुद तैय्यार किया एक बार अबूजेहल कुछ लोगों के साथ मिल के हुज़ूर[स॰] को सताने लगा तालिब से यह अत्याचार न देखा गया आपने अबूजेहल को इतना पीटा की वह बेदम हो गया अगर अबूलहब ने बाद में आके उसे छुड़ाया न होता तो तालिब उसकी जीवन लीला समाप्त ही कर देते जब मां को इसकी जानकारी हुयी तो अरदी ने कहा कि तालिब की जिन्दगी का यादगार दिन वही था जब उसने हक के लिये अपने मामूं अबूजेहल की खबर ली अदरी ने अपने साहित्य से जिस तरह हुज़ूर के जीवनकाल में इस्लाम की सेवा की पैग़म्बर की वफ़ात के बाद भी इसी राह पर चलती रही आपने हज़रत का जो मरसिया कहा है उसमें आप की मज़हबी व अदबी रूह पूरी ताक़त के साथ नुमांया है।

हज़रत अमीरूल मोमिनीन की शहादत के बाद जब कि आप बहुत बूढ़ी हो चुकी थीं लेकिन आप की मज़हबी रूह में कोई कमजोरी नहीं आयी अमीर मुवाइयः के दरबार में बड़ी जुर्रत और जियालेपन से भाषण किया हज़रत अली[अ॰] का हक़ दलीलों से सिद्ध किया और अमीर मुआवियः की हट धर्मी बेधड़क बयान की।

क्या जनाबे सफीयः की सहनशीलता का आदर्श बिल्कुल रायगां गया, सर्वथा व्यर्थ गया क्या भाई (जनाबे हमजः) की लाश पर उनका इसलिए पहुंचने का वाकिअः कि खुदा की राह में शहीद हुये भाई की हालत देख कर सब्र करें और खुदा से बदले की उम्मीदवार हों, इतिहास की आखिरी मिसाल बन के रह गया! क्या कर्बला में कोई बहन इससे हजार गुना दर्दनाक मन्जर अपने भाई के देख के सब्र व जब्त, संतोष और संयम का पहाड़ नहीं बनी रहीं! और क्या हज़रत सफीयः की तरह किसी खातून ने कर्बला में अपनी बेबसी की अवस्था में अपने बचे हुए परिवार जनों और साथ की दूसरी औरतों की सुरक्षा का कर्तव्य नहीं निभाया। अगर इनको अपने मिशन की तरफ से बंदी बन जाने का आदेश न मिला तो क्या यह बीबियां हज़रत अब्बास, हज़रत अली अकबर और हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] के शहीद हो जाने का दुश्मनों को एहसास होने देती।

और क्या जनाबे अली अकबर का यज़ीद की जमात के मुकाबले के लिये लड़ाई के मैदान में कारनामः इस बात को ज़ाहिर नहीं करता कि उनकी मां जनाबे लैला ने उनका पालन पोषण कितना अच्छा किया था यजीद जनाब लैला का सगा ममेरा भाई था जिस तरह तालिब ने अपने मामूं अबूजेहल से टक्कर ली अकबर ने भी यजीदी फौज से आखिरी सांस तक मुकाबिला किया। बेशक जनाब अर्दी ने अमीर मुआविया के दरबार में निहायत मुंह तोड़ और होश उड़ा देने वाली तक़रीर की लेकिन जनाबे ज़ैनब ने जिन हालात में इब्ने जियाद और यज़ीद के दरबारों में तक़रीरें की हैं वह आप अपनी मिसाल है जनाब अर्दी के सामने अभी तक उनकी विजय पूर्ण फातिहानः तारीख थी, जंग के मैदान में कुल मिला जुला के उनकी आंखों ने दुश्मनों ही लोग जियादः देखे अगरचे एक अधिकार सम्पन्न शासक के दरबार में यह आग उगलने वाली तक़रीर बहुत

महत्व रखती है। लेकिन यज़ीद और इब्ने ज़ियाद के दरबार की तक़रीरों के मुकाबले में इनको नहीं लाया जा सकता। कर्बला का गंजे शहीदां (शहीदों की सामूहिक कब्र) देखने के बाद, सरों की चादरें दुश्मनों द्वारा छिन जाने के बाद बारह गले एक रस्सी में बंध जाने के बाद और बगैर हौदे के ऊंटों पर दर ब दर घुमाये जाने के बाद दरबारों तमाशाईयों की भीड़ में जहां भाई का कटा हुआ सर सोने के थाल में रखा हुआ है और बधाई के बाजे बज रहे हैं और शासक के तनख़्वाहिये चापलूस गुलाम विषय की बधाई दे रहे हैं ऐसे आलम में फिर होश हवास को संभाल, उद्देश्य का उद्घोष, हक की जीत, नाहक़ की हार का ऐलान, हिम्मत और जियाले पन की एक ऐसी बेनज़ीर मिसाल है जिस में पोती का पाया दादी से उतना हीं ऊंचा मालूम होता है जैसे हिमालय की चोटी दुनिया के किसी छोटे से पहाड़ के मुक़ाबले में गगन चुम्बी लगती है।

जनाबे खदीजा के बारे में भी इतिहास ने बहुत सुनहरे गुण पेश किये हैं जनाब खदीजाः जनाब जैनब की सगी नानी हैं। इस्लाम से पहले सारा अरब "आप को ताहिरः कहता था। इतिहास के शब्द उनके बारे में यह है कि उनका अनगिनत धन, बेनजीर खुलूस (अद्भुत सत्यता) और महानतम कुर्बानी ने इस्लाम की नींव मजबूत की। अगरचे उनकी अपनी गोद में बैठने का मौका जनाब जैनब को नहीं मिला मगर यह नहीं कहा जा सकता कि जनाब जैनब को उनके कौशल का कोई हिस्सा नहीं मिला। पैग़म्बर के घर में हज़रत खदीजा एक आदर्श महिला के रूप में याद की गयीं उन्होंने सत्य के लिए अरब के कबीलों का विरोध मोल लिया उन्होंने अपना सारा माल, सारा समय और सारी सत्ता इस्लामी आन्दोलन पर कुर्बान कर दीं और जिस तरह हज़रत पैग़म्बर और दूसरे बनी हाशिम कुरैश की नजर बंदी की मुसीबत झेलते रहे जनाब खदीजा ने भी बहुत खुले मन के साथ बर्दाश्त किया।

जनाबे खदीजा की जिन्दगी इस्लाम में इतनी सम्मानित थी कि उनकी मिलने जुलने वालियां जब पैग़म्बर आवास में आती थीं तो उनका विशेष रूप से ध्यान रखा जाता था जनाब खदीजा के निधन उपरांत भी इन लोगों का पैग़म्बर के घर में बड़ा सम्मान था। एक बार हज़रत पैग़म्बर की एक बीबी ने कहा भी कि आप उस बुढ़िया का बहुत ख़्याल करते हैं हुज़ूर[स०] ने फरमाया कि यह खदीजा के ज़माने में आया करती थीं पुराने व्यवहार की रक्षा ईमान की निशानी है। हुज़ूर[स०] खुद और खूला, अस्मा बिन्ते अमीस और मक्के की दूसरी औरतों से कर्बला की फातिमी खवातीन को उनके नानी के हालात सुनने में न आते होंगे क्या जनाब जैनब का इमाम हुसैन[अ०] के साथ मदीने से सफर और कर्बला की सभी भयानक तकलीफों को झेलना और शाम के कारागार में बंदी अवस्था में हज़रत ज़ैनब को अपनी नानी हज़रत खदीजा से कुछ भी सहन शक्ति नहीं मिली जबकि वह रसूलुलाह के साथ शाबे अबीतालिब में नज़र बंद थी हज़रत पैग़म्बर की एक बीबी जनाब जैनब बिन्ते ज़हरा जो सौतेली नानी भी थीं और नाना और बाप की फुफी की लड़की भी थीं सन 20 हिजरी तक जिन्दा रही हैं। 31 साल की उम्र में उनका निकाह हुआ, और 50 साल की उम्र में उनका इन्तेक़ाल हुआ करबला की ख़्वातीन की इनकी बुजुर्गानः शफक़त (स्नेह) का भी आनंद मिला इनका मजदूरी पर काम करना चमड़े रंग के अपनी ज़िन्दगी बसर करना अनाथों और रांडों की देखभाल करना यह ऐसे सदगुण हैं जो कर्बला की औरतों का विरसः (थाति) है हजरत उमर का बारह हजार दीनार इनकी पेन्शन मुकर्रर करना और उनका यह समझना कि हम उस दौलत से अपने हाथ को मैला करके सांसारिक कामनाओं में उलझ जायेंगे मजबूर वजीफः कुबूल करना और खुदा से यह दुआ करना कि मुझे अब आगे सरकार की मेहरबानी का ऋणी न होना पड़े और रूपये को उसी वक्त अजीज़ों और जरूरतमन्दों में बांट देना एक ऐसा आचरण है जिससे उनकी दर्यादिली, गरीबनवाजी, दानवीरता और जो कुछ मिले उस

पर संतुष्ट रहने का इजहार है।

जब कर्बला की खवातीन की तरफ से यजीद से कहा गया कि हमारा लूटा हुआ माल हमको वापस कर दो और यज़ीद ने जवाब दिया कि तुम को तुम्हारे लुटे हुए माल से बहुत बढ़ कर दिया जायेगा तो इन बेनियाज़ खवातीन की तरफ से कहा गया कि हम को तुम्हारे माल की जरूरत नहीं हमने अपना लूटा हुआ माल इसलिये मांगा है कि उसमें हमारी दादी हजरत फातिमा[सा०] का चर्खा, चादर, हार और क़मीस है मगर यज़ीद ने आग्रह किया और दो सौ दीनार बढ़ा के दिया अहले–बैत ने उसी वक्त यह धनराशि फक़ीरों ओर ग़रीबों को बांट दी।

हज़रत पैग़म्बर की एक पत्नी उम्मे सलमा की सीख और स्नेह कर्बला की ख़वातीन के साथ कितनी थी। इसका अन्दाजः लगाने के लिये हमें अनुमान की भी जरूरत नहीं। कर्बला के वाकिए के बाद तक आप से कर्बला की ख़वातीन को लाभ उठाने का मौक़ा मिला। आप बड़े रूत्बे की बीवी थी। जनाब खदीजः के बाद आप का सुलूक हुजूर[स०] की अवलाद और परिवार के साथ ऐसा था कि यह महसूस नहीं हो सका कि उनके सरसे शफीक मस्तामयी मां का सायः उठ गया है। उनका जीवन अहले बैत की तारीख में यूं घुला मिला है जैसे दूध में शकर ''तत्हीर'' वाली आयत उतरने में आप के घर का ज़िक्र आता है। जनाब सैय्यदः के निकाह के मौके पर आप का नाम आता है। हसनैन[अ०] की पैदाइश के अवसर पर नाम आता है। खिलाफत के विवाद में आप का नाम आता है। ''जमल'' और ''सिफ्फीन'' की लड़ाईयों में आप का नाम आता है। कर्बला की त्रासदी के आरम्भ और अंत में आप का नाम आता है। हज़रत उम्मे सलमा एक यात्रा करने वाली, विद्यावती, साहित्य सेवी, लेखिका, कवित्री, धर्म ज्ञानी और राजनीतिक ठीका कार थीं। अपने युग की सरकारों पर आप ने जीवट के साथ आलोचनांए की हैं। अपने बेटे उमर बिन सलमा को हक और न्याय की सहायता के लिए हज़रत अली[अ०] के सुपुर्द कर दिया। उनकी बेटी जैनब के बारे में कहा जाता है कि मदीने की औरतों में उनसे ज्यादा कोई धर्म विधि के मर्म जानने वाली न थीं। अगर उनकी जीवन गाथा सामने रखी जाये तो कर्बला की खवातीन के आचरण के बहुत से सोते मालूम हो सकते हैं।

जनाब सैय्यदा[अ०] ने अस्मा बिन्त अमीस से जानकारी चाही कि हब्श में औरत का जनाजः उठाने के लिए कैसे सन्दूक़ में लाया जाता है तो जनाब अस्मा ने नमूना बना कर पेश किया और जनाब सैय्यदा ने अपने लिये उसे पसन्द किया तो अचरज नहीं कि पैग़म्बर की रोम की रहने वाली पत्नी जनाब मारियः क़िब्तियः की भी कुछ बातें उनको पसन्द आयी हों। खुद जनाब फ़ातिमा[स०] ने अपने जिगर के टुकड़ों को अपने किन–किन सदगुणों का वारिस बनाया। यह हिस्सा एक तफ्सीली बयान का बुलावा देता है। लकिन हमने ऊपर लाज़िम किया है कि हम अपनी मंजिल बड़ी तेज चाल से तय करेंगे, और अपने विषय पर हलकी रोशनी डालते हुए लेख समाप्त करेंगे।

जनाब फ़ातिमा जहरा[स०] का ज्ञान, उनकी ग़ैरत, सच बात कहने में उनका जीवट और जुर्अत, उनकी ज़िन्दगी की सादगी, उनकी फ़साहत व बलाग़त, राजनीति पर उनकी टीका यह चीज़े ऐसी हैं जिसमें उनकी अवलाद की आचरण–रचना के लिये काफी सामग्री है। अमीरूल मोमिनीन के इस इर्शाद में कि ''फातिमा इबादत में मेरी बड़ी अच्छी मददगार है, जनाब सैय्यदा की इबादत गुजारी की एक तस्वीर है जिसके नूर से हमारी मारफत की आंखें चौंधिया जाती हैं।

हुजूर[स०] का अपनी बेटी से सवाल कि औरत के लिये सबसे अच्छी चीज़ क्या है? और मासूमः का बताना कि वह किसी अजनबी मर्द को न देखे और कोई अजनबी मर्द उसे न देखे, और रसूल का बेटी को सीने से लगा लेना, यह एक ऐसा सबक था जो कर्बला की हर फातिमी औरत ने

दिल व जान से सुना। यह गैरत व हमीयत कर्बला की हर खातून ने पायी थी और कर्बला से कूफे और कूफे से शाम तक इसकी अनगिनत मिसालें हैं। दमिश्क़ के करीब पहुंच के जनाब उम्मे कुलसूम की शिम्र से यह फ़रमाइश कि जब शहर में प्रवेश करना तो हमें ऐसे रास्ते से ले चलना जहां हुजूम कम हो, और सरों को हमसे दूर ले के चलना, नामहरम लोगों की निगाह का बार हमारी गैरत से नहीं उठता क्या यह और ऐसे बहुत से अनुरोध फातिमी गैरत को जाहिर नहीं करते और नहीं मालूम होता कि फ़ातिमी खून इन की रगों में है। झुकी हुयी निगाहें और बालों से छिपे हुए चेहरे बता रहे हैं कि फातिमी गैरत और लाज की नक़ाबें, सरों से चादर उतार लिये जाने के बाद भी इनके सरों पर है। क्या जनाब सैय्यदः का अपने बाप की वफ़ात पर तारीखी मरसियः और अदालत ''फिदक'' के बारे में ज़लजलः डाल देने वाला बयान, जनाब जैनब और जनाब उम्मे कुलसूम के कानों तक नहीं पहुंचा। नहीं! जब जनाब जैनब इब्ने ज़ियाद का मुंह अपनी तर्कना से सी रही थी और जब यजीद को अपनी तक़रीर से गूंगा बना रही थी, उस वक्त जैनब के सीने में फ़ातिमः का ही दिल दहन में फ़ातिमा की ही जबान थी। वही कुर्आन और हदीस से तर्कना, बयान का वही जोर जुर्अत, वही स्पष्टता। अगर किसी ने सैय्यदः की तारीख पढ़ी है और वह जैनब से नावाकिफ़ है, तो बोलने का अन्दाज, तर्क वितर्क की शक्ति, शेरानः हिम्मत से उसका जेहन फातिमी खुसूसीयतों की तरफ मुड़ जायेगा। यह तो जनाब जैनब और खवातीने करबला की ननिहाली तरबियत की हलकी सी तस्वीर थी।

दधियाली खवातीन के कारनामे भी कम सबक आमोज नहीं। जनाब जैनब की दादी फ़ातिमः बिन्ते असद एक खास रूह की मालिकः थीं, वह जिन्दगी के आखिरी वक्त तक साक्षात अमल रहीं। हुजूर[सा०] की मां का निधन आप के बचपन में ही हो गया आप जनाब फ़ातिमा बिन्ते असद की गोद के पाले हैं और हुजूर[सा०] की ज़िन्दगी में आप का काफी हिस्सा है। और आप ही की तरबियत में जाफरे तैय्यार और हज़रत अली[अ०] ने हुजूर के लिये फिदाकारी की तालीम पायी। फ़ातिमा बिन्ते असद बहुत बूढ़ी हो जाने के बाद भी थकावट का नाम नहीं जानती थीं, सरापा अमल थीं। जहां रहीं वहां जीवन और जागरूकता की मिसाल बन के रहीं। भतीजे के साथ उनकी मोहब्बत और मेहरबानियों का यह आलम था कि आप को हुजूर[सा०] मां कहते थे। आप की बदौलत हुजूर[सा०] को यतीमी का कष्ट महसूस नहीं होने पाया। जब जनाब सैय्यदः की शादी हजरत अली[अ०] से हुयी तो फातिमः बिन्ते असद एक मेहरबान मां की तरह उनके आराम और राहत की निगरां रही। कठिन काम अपने जिम्मे लिये। बुढ़ापे में कुंए से पानी भर के लाना, जलौनी लकड़ी चुन के लाना, और घर बाहर की तमाम जरूरतों को हंसी खुशी अपने सर लेना एक अनुकरणीय मिसाल थी। जनाब जैनब की ज़िन्दगी पर उनका असर बहुत गहरा मालूम होता है। कर्बला की खवातीन में अगरचे उनकी बहन जनाबे कुलसूम का भी नाम आता है, और जनाब रमलः इमाम बिन हसन[अ०] की ज़ौजः और जनाब रबाब भी हैं लेकिन तमाम जिम्मदारियां जनाब जैनब ने अपने सर ले लीं। ऐसा लगता है कि इमाम के साथ जनाब जैनब के सिवा कोई और खातून थीं ही नहीं बहन की खबरगीर, भाईयों की खैरतलब, भतीजो भतीजियों की फिदायी, भावजों की मेहरबान, सारे घर की खुशनूदी और राहत रसानी की चिन्ता, बच्चों में अपने बाप, दादा की तालीम का फैलाना और फातिमी जीवन धारा की राह दिखाना, यह सब उच्च कोटि के गुण जनाब जैनब की जिन्दगी में यूं फैले हैं जैसे दरख्त की जड़ें ज़मीन के चारों ओर फैलती हैं।

अगर मैंने उम्मे हानी की चर्चा न की तो

एक जरूरी नाम के भूल जाने का आरोप मुझ पर लग सकता है। आप हजरत ज़ैनब की हक़ीकी फूफी थीं। जनाब उम्मे हानी का अक़्द इस्लाम पूर्वकाल में हबीरः बिन अम्र मखजूमी के साथ हुआ था। उम्मे हानी ने इस्लाम कुबूल कर लिया, शौहर अपने धर्म पर बने रहे। इस्लाम ने तौहीद का रिश्ता शिर्क से तोड़ दिया। उसकी औलाद की दीक्षा देख के हुजूर[स॰] ने फर्माया कि कुरैश से बेहतर औरतें कहीं नहीं पैदा हुयीं। औलाद पर जो जान से फिदा, पति की वफादार। जनाब उम्मे हानी से इस्लाम को बहुत यश पहुंचा। सुन्नी भाईयों की हदीस की मश्हूर छः किताबों में और उनके अलावा अन्य पुस्तकों में भी आप की बयान की हुयी काफी तादाद में हदीसें ली गयी हैं। इनके सुपुत्र जोदा और उनके पोते यहया और नवासे हारून और गुलाम अबूबर्रः, अबू सालेह और उनके चचेरे भाई बिन अब्बास और अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन नोफिल हाशिमी और अब्दुल्लाह के साहिबजादे अब्द बिन अबी लैला और मुजाहिद आदि ने इन से बहुत रिवायतें की हैं। मक्के की विजय पर जनाब उम्मे हानी ने कुछ मुश्रिकीन को अपने घर में शरण दी थी और उन्हें भरोसः था कि उनका यह कदम हुजूर[स॰] को नागवार न होगा। हज़रत अली[अ॰] को मालूम हुआ तो चेहरे पर नक़ाब डाले हुये आप उम्मे हानी के घर में चले गये।

जनाब उम्मे हानी को यह नहीं मालूम था कि यह हज़रत अली[अ॰] हैं। पहले तो आपने घर में दाख़िल होने से रोका। जब वह नहीं रूके तो हाथ पकड़ लिया और क़सम खायी कि मैं तुम्हारी शिकायत हज़रत पैग़म्बर[स॰] से करूंगी जब हज़रत ने नक़ाब चेहरे से हटायी तो पहचाना कि कोई ग़ैर नहीं। अली हैं। अपनी क़सम पूरी करने के लिये हुजूर[स॰] के पास आयीं। हज़रत भी साथ–साथ थे। हुजूर[स॰] ने किस्सा पूछा, तो उम्मे हानी के बाद हज़रत अली[अ॰] ने वाकिअः बयान किया और कहा कि जब उम्मे हानी ने मेरी कलाई पकड़ी तो मैं बेबस हो गया। तब हुजूर[स॰] ने बहुत मूल्यवान शब्दों में उम्मे हानी की जुर्अत और बहादुरी की तस्दीक की, फर्माया कि अगर अबूतालिब के वंश से दुनिया भर के लोग होते उनमें कोई बुज़दिल और कायर न होता। बल्कि सब वीर शोर होते।

हज़रत उम्मे हानी ने लम्बी उम्र पायी। हज़रत अली[स॰] की शहादत तक वह जिंदा रहीं। आप सरीखे खैबर के विजेता और "मरहब शिकार" का उम्मे हानी के दिल की कुव्वत, जुर्अत और जियालेपन का इक़रार कोई मामूली स्वीकारोक्ती नहीं है। इस राशनी में हमें जनाब ज़ैनब के आत्मविश्वास का भेद जानना चाहिए हज़रत ज़ैनब के रस्सों में बंधे हुये बाजुओं को देखकर यह न समझना चाहिए कि उन में तवानाई न थी। बल कि बनी उमैय्या की बे मज़हबी और वहशियानः जुल्म को बेनक़ाब करने के लिए जनाब ज़ैनब ने उनके जोर जुल्म सह लिये नहीं दसवीं मोहर्रम की शाम तक कर्बला में जंग का सिलसिला खत्म न होता। ग्यारहवीं मोहर्रम को हाशिमी खवातीन की वीरता का इतिहास दुहराया जाता। सफीयः और उम्मे हानी की याद फिर ताजः हो जाती।

चाहे कर्बला के हाशिमी मर्द हों या औरतें, इन सब के कमालात इनके बुजुर्गों की तरबियत का नतीजा थे। बनी उमैय्या और बनी फातिमा में दीक्षा–शिक्षा के सिद्धान्त बिलकुल अलग–अलग थे। खासकर खवातीन की तरबियत दोनों में अलग–अलग रूप की थीं, जिस तरह अश्मीना (यूनान) में दुराचारी औरतों को सर पर चढ़ाया जाता था और गाने नाचने वालियां सर का मुकुट बनी हुई थीं। वैसे ही इस्लाम के पहले अरब देश में भी कुछ घरानों को छोड के औरतों की हालत बहुत गिरी हुई थी शहर के आवारः मिज़ाज मर्द गंवार औरतों को सताते थे। बनी उमैय्या ने इस्लामी सभ्यता को स्वीकार नहीं किया। वह इस्लाम पूर्व के "जाहिली" युग की सभ्यता के

चाहने वाले थे, जिनमें बोतल बकरे के साथ बाला भी एक अंग थी और उसकी पवित्रता का उन्हें जरा सा भी ध्यान न था। जब तक अरब में उमवी शासन अज़ाब के समान मानवता के गले की गरदन का छुरा बना रहा, औरत उसी अपमान पूर्ण मक्सद के अन्तर्गत जीवन बिताती रही। जब उमैय्या के पांव अरब से उखड़ गये और उनके राज्य का अंत हो गया और उन्दुलुस में उनकी हुकूमत क़ायम हो गयी तो वहां भी यह बीमारी फैल गयी, सैनिक जब रण क्षेत्र में जाते थे, तो रजज़ में अपने धर्म या मान सम्मान पर गर्व के बजाय अपनी चहीतियों, महबूबाओं के बारे में कविता पाठ करते थे और जिनके चित्र या कोई अन्य प्रतीक अपनी तलवार और अस्लहों पर अंकित कर लिया करते थे। औरत के विषय में यह उमैय्या वालों के रूजहान थे। इसके विपरीत हज़रत अली[अ०] ने अपने शासन काल में औरतों के सामने उच्च कोटि के उद्देश्य रख दिए। इनकी तरक्की और प्रगति के सहीह अवसर दिये। उच्च उद्देश्य के मातहत उनको शिक्षा परिशिक्षा की राह दिखायी। आप के ज़माने में सूदः बिन्ते अम्मार बिन अश्तर हमदामनीः, जरता बिन्ते अदी, क़ैस हमदानियः उम्मे सनां, अस्करशः और दूसरी शेर दिल खवातीन ने उमवी सियासत के खिलाफ अमीर मुआवियः के दरबार में जो बरजस्तः बिजली भरी कवितायें पढ़ी, भाषण दिये हैं। उन से हज़रत अली[अ०] की फूंकी हुयी रूह का सच्चा इज़हार होता है। आप के युग में ख़वातीन ने ज़िन्दगी में अपना स्थान जान लिया वह समझने लगी कि वह इस तरह एक बेज़बान औरत नहीं जिन्हें मर्द अपनी गोष्ठी की सजावट का सामान समझे जैसा कि उमैय्या वालों का दृष्टिकोण था। बल्कि हक़ और सच्चाई की रक्षा के लिए शक्तिशाली दिल रखती थी और अपने धर्म, जीवन पद्धति और सिद्धान्तों के लिए जंग में अपनी स्वाभाविक क्षमता के अन्दर जी जान से भाग ले सकती थीं, जब हज़रत के इर्शादात व हिदायात से असर ले के जन साधारण में ऐसी औरतें पैदा हो गयीं जिन के मन पर हुकूमत का कोई रोब नहीं, मौत का कोई डर नहीं तो इमाम ने खुद हजरत जैनब और उम्मे कुलसूम को कैसा बनाया होगा। और इमाम हुसैन[अ०] ने इनकी किन सलाहियतों पर भरोसा कर के और पूरी जम्ए खातिरी से उन्हें साथ लिया होगा। यह इतना ऊपरी सवाल नहीं है कि सरसरी तौर से समझ लिया जाये। खवातीन कर्बला की रूहानी और समाजी जिन्दगी न मिटने वाली दौलत थी जिन्हें ख़वातीने कर्बला ने विरसे (थाती) में पाया। और इनमें बेहिसाब बढ़ोत्तरी की।



¼s ue 16 dk cfd;k————½

इस घटना के पश्चात लगभग दस मास व्यतीत हो गये थे कि अकस्मात एक दिन सवेरे की डाक से सिचियाँग को एक विदेशी पत्र मिला, सिचियाँग ने लिफाफा खोला तो अंगेज़ी भाषा में एक अपर्याप्त पत्र मिला जो इस प्रकार था––

न्युयार्क, 26 नवम्बर 1962 ई०

प्रिय मित्र !

''आशा है तुम सकुशल होगे। तुम से विदा होकर मैं दूसरे दिन अपने देश के लिए प्रस्थान कर गया था। इस बीच पत्र न भेजने की क्षमा चाहता हूं। जबसे मैं यहां लौटकर आया हूं मेरा कार्य केवल इस्लामी इतिहास का अध्ययन करना है, और आज मैं यह बात कहने पर विवश हो गया कि–

''हुसैन''–एक महान आत्मा तथा उच्च चरित्र के वाहक थे जिन पर मानवता को गर्व रहेगा, साथ ही साथ वे निर्दोश और अमर हैं।

'यज़ीद':– पापी और अत्याचारी होने के साथ साथ एक ऐसा मानव शत्रु एंव हत्यारा था जो मानवता के माथे का कलंक है।

मैं तुम्हारे इस पथ प्रदर्शन का कृतज्ञ हूं।''

तुम्हारा केली ब्राउन

(इमामिया मिशन लखनऊ का प्रकाशन नं0 554 मुहर्रम 1388 हि0/अप्रैल 1968 ई0)



हुसैन^{v0} बिन अली^{v0} की महानता और हम

ekSykukdkSj fu;kt hl lgc ikfdLrku
vuqokn %& ukc lS lTt kn eqLrQkl lgc

हुसैन[अ०] की चर्चा वह चर्चा है जिसने मुसलमानों को हर युग में हर अत्याचार और दमन (जब्र व इस्तिब्दाद) के सामने सीने की ढाल बना लेने और इस्लाम की सत्यता को जीवित और अमर रखने के लिए (ज़िन्दा व जाविदां रखने के लिए) अपने अस्तित्व को मिटा देने की सीखी है। इमाम हुसैन[अ०] धर्म के मूल आदर्शों और मानव जीवन की इस देवी पद्धति से संघर्ष की महिमा और सच्चाई ज़ाहिर करने के लिए कर्बला के मैदान में आए। और अपना तथा अपनी सन्तान का खून देकर इस संघर्ष पद्धति को अमर कर गये। इस सत्यता का रास्ता रोकने के लिए आसुरी शक्तियों की भीड़ आई। जिसने सच्चाई के इस महान और अद्वितीय सेना नायक का सिर काट कर भाले पर बलन्द कर दिया और प्रसन्नता से ढोल पीटे। लेकिन इतिहास ने देखा कि सत्यता रक्त रंजित होने के बाद भी सिर उठाए है और झूठ की प्रत्येक प्रसन्नता झूठी और ग़लत सिद्ध हुई। हुसैन[अ०] आज भी जीवित हैं और यज़ीद एक युग हुआ कि विनाश के घाट उतर गया।

यह महान इस्लामी स्मृति संसार के कोने–कोने में विभिन्न रूपों से मनाई जाती है। हुसैन[अ०] का शोक मनाने वाले मातम करके इस यथार्थ को याद करते हैं तो वह लोग जो इस घटना को अनेक चिन्तन दृष्टि से देखते हैं, वह अपने ढंग से इसकी चर्चा करके गोष्ठयों को प्रकाश पुन्ज बनाते हैं। तरीक़ा जो भी हो उसमें मुश्तरक यह बात होती है कि सच्चाई को ऊंचा रखने के लिए जान देना मंहगा सौदा नहीं है।

याद का यही मुश्तरक पक्ष इस्लाम के माध्यम से मुसलमानों को नया खून और नया उत्साह देता रहा है। इस नये उत्साह से हर युग में कई नये सूरज उभरे हैं। मुस्लिम देशों का वर्तमान इतिहास ऐसे ही नये सूरजों का इतिहास है। अफ्रीका में, मध्य पूर्व में दक्षिण पूर्व एशिया में एक नहीं कई सवेरे हुए और हर सुबह की ऊषा में हुसैन[अ०] के खून की लाली प्रत्येक यथार्थवादी को दिखाई देती है।

खुली हुई बात है कि इस अदभुत घटना के यह मुश्तरका मूल्य ऐसे नहीं कि याद करने के रंग–ढंग के मतभेद पर इनकी बलि चढ़ाकर इन्हें अकारथ, अप्रभावी बना दिया जाए। यह उस मतभेद से कहीं महान, कहीं लाभकारी और कहीं ऊंचे दर्जे का इश्तिराक और साझा है जिस पर मतभेद न्यौछावर किये जा सकते हैं। हमें इस स्पष्ट भेद को महसूस करना चाहिए और हुसैन[अ०] के सर्वमान्य और हर प्रकार से निर्विवादित व्यक्तित्व की महिमा से वह लाभ उठाना चाहिए जो इसका सच्चा लाभ है। और इसे छोटे–छोटे विवादों का रूप देकर अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी नहीं मारनी चाहिए। याद मनाने के तरीक़ों का विवाद वास्तव में कोई अर्थ नहीं रखता और यदि यह

विवाद इमाम के वास्तविक उद्देश्य को नकारने पर उतर आए तो उसकी नकारात्मक हैसियत अति कष्टदायक और हृदय में चुभने वाली होगी।

हममें कोई इस बात का दावा नहीं कर सकता कि शीआ़ और सुन्नी दो अलग धर्म हैं। यह बात सर्वमान्य है कि शीआ़ और सुन्नी दो पथ हैं, यह एक ही धर्म की दो भिन्न व्याख्याएं हैं। दो विचार शैली हैं। जिन्होंने अपने–अपने ढंग से धर्म को समझा और इतिहास को पढ़ा। इतिहास स्वयं एक शास्त्रीय विषय है और इसे अपने–अपने ढंग से पढ़ने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता।

दूसरे शब्दों में शीआ़ और सुन्नी विचार पथ में कोई बुनियादी भेद नहीं है। भेद केवल भाष्य और व्याख्या (तफ़सीर और ताबीर) का है। और मानव समुदाय में इस प्रकार के वैचारिक मतभेदों का न होना कल्पना से परे हैं। दो व्यक्तियों के बीच मतभेद हो सकता है तो क्या कारण है कि करोड़ों व्यक्तियों के बीच मतभेद न पाया जाए? मतभेद का अस्तित्व वरदान बन जाता है यदि क्रिया के केन्द्र और चिन्तन की एकता को वह छिन्न–भिन्न न करे। और यही मतभेद अभिशाप बन जाता है यदि इसके कारण क्रिया की केन्द्रीयता एवं एकता विघटित हो जाए।

हज़रत इमाम हुसैन[अ०] सबके थे, सबके हैं, और सभी के रहेंगे। उनका कोई अपना दल नहीं था उनको नाना की उम्मत यानी पंथ का प्रत्येक व्यक्ति प्यारा था। जब अचेत और नासमझ जल्लादों ने आपकी पवित्र गर्दन पर अत्याचार की तलवार चलाई उस समय भी आपकी ज़बान से इस पंथ के लिए आशीष निकली। इस रवायत के ऐतिहासिक शोध से बहस नहीं हैं लेकिन जो लोग इसे सही समझते हों वह इसके उपदेशात्मक पक्ष, (सबक़ आमोज़ पहलू) पर ध्यान दें कि इमाम हुसैन[अ०] का कटा हुआ सिर जब भाले पर चढ़ा हुआ था तो कुर्आन पढ़ रहा था। इमाम हुसैन[अ०] आज भी हमें कुर्आन पढ़ने और खुदा के उस आख़िरी संदेश की ओर बुलाते मालूम होते हैं जिसका मुख्य उद्देश्य यह है कि मुसलमान आपस में भाई–भाई हैं।

लेकिन संसार के हर दृष्टिकोण और हर विचार के साथ जो व्यवहार होता है मुसलमानों के भाईचारे की महान कल्पना और जीवनदायी दृष्टिकोण के साथ भी हुआ यानी यह दृष्टिकोण पुस्तकों में बड़े–बड़े शब्दों में लिख लिया गया और इसे सुन्दर जिल्दों में बन्द करके ताकों पर रख दिया गया।

यह बात कौन नहीं जानता कि शीआ और सुन्नी विचारधारा में सौ में से नब्बे बातों में एकमतता है अधिक से अधिक केवल दस बातों में मतभेद है। लेकिन होने यह लगा कि इन नब्बे बातों की चर्चा किसी गोष्ठी या सभा में नहीं होती और इन दस बातों की ध्वनि–प्रति–ध्वनि से हर मस्जिद गूंज रही है। कुर्आन ने तो अहले किताब को भी मुश्तरक बुनियादों पर एकता की दावत देने में हिचक नहीं दिखाई। परन्तु हम एक रसूल के पंथी होते हुए भी मुश्तरक बुनियादों पर एके की ज़रूरत महसूस नहीं करते। काश! हमारे धार्मिक नेता इस्लाम ही के उच्च आदर्शों के अनुसार जिन पर किसी का कोई मतभेद नहीं है कि ''आओ हम इन बातों को आधार बनाकर एक हो जाएं जो हममें समान हैं।'' एकता और एकमतता के प्रयत्नों का प्रारम्भ करें और एक दूसरे के विश्वासों का सम्मान करते हुए वाद–विवाद (शास्त्रार्थ) का वातावरण बनाए बिना आपस में समझने–समझाने की कोशिश करें।

हमें विश्वास है कि कुछ थोड़े से सिद्धान्तों को छोड़कर कुल मौलिक सिद्धान्तों पर एकमत हो जाएंगे। मुसलमानों पर यह विश्वास स्पष्ट है कि इमाम हुसैन[अ०] सत्यता पर थे और उन्होंने सत्यता की आवाज़ को ऊंचा करने के लिए

असत्य की अत्याचारी तलवार के नीचे अपनी और अपने सम्बन्धियों की गर्दन रख दी। और जो काम गर्दनें काटकर नहीं हो सकता था उसे गर्दने कटवाकर पूरा कर दिया। यह विश्वास सर्वमान्य है और इस विचार पर हम सब का ईमान अडिग है। परन्तु इसके बावजूद हम इतिहास की इस बड़ी त्रासदी पर ध्यान नहीं देते कि इस दृढ़तम आधार के होते हुए भी हम एक दूसरे के दुश्मन हो जाते हैं। आख़िर ऐसा क्यों है? 'हमारे इतिहास में यह विष कहां से आया' जिसने हमें इस सीमा तक अंधा कर दिया कि इतने बड़े बलिदान से लाभान्वित होने के स्थान पर हमने उसी को अपनी मौत का बहाना बना लिया।

मैं जब इतिहास उठाकर उसका अध्ययन करता हूं तो मुझे यह नाग फुँकारता दिखाई देता है और मैं अनुभव करता हूं कि इसकी निशानदही, इसका इंगित किया जाना ज़रूरी है।

सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि यह नाग केवल इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं। इसकी लम्बी ज़बान हमें आज भी अपने चारों ओर तड़पती और क़ौदती दिखाई देती है। वही स्वार्थ, वही छोटे–छोटे निजी लाभ, वही रोटी और शोरबे के प्याले की छीना–झपटी, मोटरों और वायुयानों पर यात्रा करने की इच्छा और लोगों को भड़काकर अपने अन्दर छिपे हुए शैतान को संतुष्ट करने की कामना और यह गर्व कि वह ज़बान के हिलाने या क़लम के डुलाने से ही आग लगा सकते हैं खून की नदियां बहा सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि सही विचारधारा के विद्वान, उपदेशक और लेखक सामान्य मुसलमानों में इतनी चेतना पैदा कर दें कि वह मुसलमानों के इन खूनी सौदागरों के निकट न जाएं। और ऐसा वातावरण तैयार हो जाए। जिसमें लालची कठमुल्लाओं को मुसलमानों का खून बेचकर रोटी प्राप्त करने का साहस न हो सके।





बारह मुहर्रम

y§kd %tulc 'kkSr l lgc fcyxkeh

आज जंगल में शहे गुलगूँ क़बा के फूल हैं
आज पझमुर्दा मज़ारे मुस्तफ़ा के फूल हैं

इस तरह उजड़ा न होगा कोई गुल्शन दहर में
जिस तरह पामाल बाग़े मुर्तज़ा के फूल हैं

फ़ातहे के वास्ते आये हैं मक़्तल में हरम
करबला में कुश्त ए करबोबला के फूल हैं

खून में डूबी हुई लाशें पड़ी हैं बेकफ़न
कौन समझेगा यह बाग़े मुस्तफ़ा के फूल हैं

खूँचकाँ लाशों पे गुरबत कह रही है यास से
किस क़दर रंगीं रियाज़े फ़ातिमा के फूल हैं

फ़ातेहा बेकस का है इसमें गुलो सौसन कहाँ
नील बाजू के हैं या दाग़े अज़ा के फूल हैं

कुछ जिगर ख़स्ता शहीदों की हैं लाशें बेकफ़न
कुछ रसन बस्ता रियाज़े फ़ातिमा के फूल हैं

अहले मातम जब लहू रोते हैं भर कर आहे सर्द
मैं समझता हूँ कि दामन में सबा के फूल हैं

शाह के अल्ताफ़ से हो जाएंगे 'शौकत' कुबूल
यह जो कुछ पझमुर्दा झोली में गदा के फूल हैं



हुसैन

हुसैन अ० और मानव जगत

izQs-j j?kqifr lgk; ^fQjkd* xksj[kiqjh

प्रिय महोदय,

तसलीम

समयाभाव से आपके कृपा पत्र का उत्तर अब तक न दे सका था। यह कुछ टूटे–फूटे बे–जोड़ वाक्य जो मेरी रूह की गहराइयों से निकले हैं सुपुर्द–ए–कलम कर रहा हूं यानी लिपि बद्ध कर रहा हूं। न जाने क्यों तबीअत की मौज ऐसी ही हुई कि अंग्रज़ी में हज़रत हुसैन अ० के मुतअल्लिक लिखूं। आपने लिखा था कि अगर अंग्रज़ी में भी मैंने लिखा तो आप उसका उर्दू में तरजुमा (अनुवाद) करा लेंगे। कोई बोली हो खुलूस और अक़ीदत, (शुद्ध हृदयता और श्रद्धा) की भाषा एक होती है।

मैं इस कामना के साथ यह पत्र समाप्त करता हूं कि अब वक़्त आ गया है कि हम हुसैन अ० के मातम से आगे की मन्ज़िल में क़दम रखें और हुसैन अ० की शहादत को (बलिदान को) दुनिया को उभारने का सन्देश समझें।

ख़ून शहीद का तेरे, आज है ज़ेबे दास्ताँ
नार–ए–इन्क़िलाब है, मातमे रफ़्तगां नहीं।

(फ़िराक़)

(तेरे शहीद का रक्त, आज कथा की शोभा बना हुआ है परन्तु वास्तव में यह क्रान्ति का नारा है, चले गये हुए लोगों का शोक उद्गार नहीं)

आप इस पत्र को चाहें तो छाप सकते हैं। और इसी खत के नीचे मेरे मज़मून का अनुवाद छाप सकते हैं। यह पत्र और लेख लिखते हुए हज़रत हुसैन अ० की याद यूं आयी कि जी भर आया।

vkidk

j?kqifr lgk; fQjkd+xksj[kiqjh

●●●

हुसैन अ० का नाम इस विशाल संसार के करोड़ों इन्सानों के लिए आबे हयात है यानी अमृत जल है। इस्लाम ने मेरी आखें हमेशा अश्क आलूद और सजल कर दी हैं। हुसैन अ० की बलन्द और पाकीज़ा सीरत (उच्च और पवित्र आचरण) महसूस किये जाने की (अनुभूमि की) चीज़ है। ऐसे शब्दों का पाना आसान नहीं जो उनके किरदार की अज़मत के मुकम्मल मज़हर हों यानी जो उनके आचरण की महानता के सम्पूर्ण प्रतीक है। यूँ तो उनकी सीरत उनके आचरण रूहानियत और आसुओं की अध्यात्म और आसुओं की सबसे ज़्यादा तेज़ रौशनी में कर्बला के अन्दर चमक दिखाती है लेकिन जो लोग हुसैन अ० की ज़िन्दगी से कर्बला में उनकी शहादत वाक़े होने से अवगत हैं उनके लिए इस ज़िन्दगी से बेदाग़ और उस्तवार सुदृढ़ पवित्रता उसकी मानवता, उसकी हृदय शुद्धता और गरिमा सच की विचित्र और कड़ी परीक्षा से मुक़ाबिले की ताक़त, यह बातें इतनी स्पष्ट हैं कि दीन–धर्म के अलगाव–विलगाव के बिना प्रत्येक व्यक्ति से हंसी खुशी श्रद्धा की भेंट पाने की मांग करती है।

ऐसे हीरो रोज़ नहीं पैदा हुआ करते

क्या सिर्फ़ मुसलमान के प्यारे हैं हुसैन
चर्खे नौ–ए–बशर के तारे हैं हुसैन
इंसान को बेदार तो हो लेने दो
हर क़ौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन
(जोश)

(क्या ऐसा है कि हुसैन[अ०] मात्र मुसलमानों में प्रिय है, नहीं, वह वास्तव में मानव जाति के आकाश पर नक्षत्र समान हैं। मानव जाति को सजग तो हो लेने दो, प्रत्येक जाति पुकारेगी कि हुसैन[अ०] हमारे हैं।)

मुझ सरीखे गुनहगार इन्सान के लिए हुसैन[अ०] के अख़लाक़ी कमालात, (नैतिक कौशल) की सही क़द्र–क़ीमत का अन्दाज़ा लगाना (ठीक मूल्यांकन करना) ग़ालिबन (सम्भवतः) अपनी योग्यता से बढ़कर जुरअत आज़माई (साहस परीक्षा) करना होगा। वह दुनिया के बड़े से बड़े पहुंचे हुए श्रषियों और शहीदों के हम पल्ला समतुल्य हैं। उनका नाम और काम उनकी ज़िन्दगी और मौत के वाक़िए, उन नस्लों की रूहें जगाएंगे जो अभी पैदा नहीं हुई हैं। कोई मर्सिया और कोई सवानेह उम्री उनकी सीरत की अजमतों को नुमायाँ नहीं कर सकती। यानी कोई शोभान्त कविता या जीवनी उनके चरित्र की महानता को प्रज्वलित नहीं कर सकती।

अन्त में सविनय एक सुझाव अपने सुन्नी और शीआ भाइयों के सामने रखना चाहता हूं। और वह यह है कि, दुनिया बदल रही है ख़ून और आग में नहा के एक नई बशरीयत जहूर पज़ीर होगी एक नई मानवता प्रकट होगी जो ज़ात और अ़कीदे की विभिन्नता को ख़त्म कर देगी जो वर्ण और विश्वास के भेद–भाव का अन्त कर देगी। यह नया मानव जगत एक खानदान (एक परिवार) होगा। इमाम हुसैन[अ०] मानव जाति के लिए जिए और मरे। सब मुसलमानों और दूसरे अक़ायद रखने वाले यानी दूसरे मतावलम्बी इन्सानों को हुसैन[अ०] की शहादत से ज़िन्दगी का सबक़ लेना चाहिए। वह हुसैन[अ०] जिनका दिल केवल मुसलमानों के लिए नहीं, सिर्फ अपने परिवार वालों के लिए नहीं, सिर्फ अपने भक्तों के लिए नहीं बल्कि मानव जाति के लिए धड़क रहा था।

आज से हमारा धर्म मानव बिरादरी होना चाहिए।

(फिराक साहब का यह लेख अंग्रेज़ी से उर्दु में रूपान्तरित होकर ''सरफ़राज़'' मोहर्रम नम्बर 1361 हि0 में प्रकाशित हुआ और फिर ''सरफ़राज़'' मोहर्रम नम्बर सन् 1400 हि0 में छपा, वहीं से लेके सम्पादन व्यवस्था ने आपके लिए इसे हिन्दी रूप दिया।)



¼'ks ua 44 dk cfd;k———½

नतीजा निकालने पर मजबूर हो जाते कि अगर यज़ीद पैग़म्बर[स०] का सच्चा खलीफ़ा (उत्तराधिकारी) न होता तो हुसैन[अ०] जैसा पुनीत इंसान हरगिज़–हरगिज़ उसकी बैअत (कुबूल) स्वीकार न करता। यक़ीनन (निश्चय) ही हुसैन[अ०] ने यज़ीद को अपने से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) समझा तभी तो उसके सामने सिरे इताअत झुका दिया यानी उसके आज्ञा पालन में नत मस्तक हो गये।

ऐसी हालत में यज़ीद का हर काम आम मुसलमानों के लिए काबिले पैरवी व तास्सी होता यानी अनुकरणीय होता और फिर इस्लाम अपने हक़ीक़ी मरकज़ व मुक़ाम से बईद हो जाता यानी इस्लाम अपने वास्तविक केन्द्र बिन्दु और स्थान से दूर जा पड़ता। हुसैन[अ०] ने मुसलमानों को गुमराही व ज़लालत यानी पथभ्रष्ट होने से बचा लिया। खुदा परस्ती (ईश्वर वादिता) पर हुसैन[अ०] का यह सबसे बड़ा एहसान यानी उपकार था। कर्बला की घटना के बाद इब्लीसी और लाहूती किरदार में एक ऐसी हदूदे फ़ासिल तामीर हो गयी यानी आसूरी और ईश्वरवादी आचरण में एक ऐसी सीमा रेखा खिंच गयी जो अब किसी के मिटाने से मिट नहीं सकती।



bele gbq8 v0

fgUhv/le Zd sni Zkea

Jhi f.Mr pfUnzdki zkn ft Kklw

हुसैनअ० को परखने के लिए हुसैनी आंख, हुसैनी दिल, और हुसैनी दिमाग़ चाहिए अर्थात् हुसैनी नेत्र, मन और मस्तिष्क चाहिए और यह सब मुझे नसीब नहीं (उपलब्ध नहीं)।

हां! लखनऊ के पुश्तैनी बाशिंदे (पीढ़ियों से लखनऊ में रहने वाले) के नातें दिल में हुसैन की मुहब्बत व इज़्ज़त प्रेम और सम्मान है। उसी जज़्बे या भाव में कुछ बोल देता हूं। और आप उसे पसन्द फ़रमाते हैं वरना सीरते हुसैनी यानी हुसैन अ० के जीवन चरित्र पर मेरा बात करना तो तुलसीदास के शब्दों में वैसा ही है जैसा कि "चींटी का समुद्र की थाह लगाने चलने या मच्छर का आसमान नापने का साहस करना।"

हज़रत, महानुभावाओं! मेरे विचार मे हज़रत इमाम हुसैन दुनिया के उस श्रेणी के महान पुरूषों में से हैं जैसे कि भगवान गौतम बुद्ध और ईसा प्रभु मसीह। आप में से बहुतों को तअज्जुब (अचरज) होगा कि हिन्दू मुकर्रिर (हिन्दू वक्ता) हज़रत इमाम हुसैन अ० की मुशाबिहत (मिलान) अपने राम और कृष्ण से न कर के 'बुद्ध ओर मसीह से कर रहा है। लेकिन मैंने इस लिए राम और कृष्ण का नाम जान बूझकर नहीं लिया कि राम और कृष्ण को हिन्दू साक्षात परमात्मा समझते हैं और जहां तक मुझे ज्ञान है न कभी इमाम हुसैन अ० ने स्वंय खुदा होने का दावा किया है और न मुसलमान ही उन्हें खुदा समझते है। खुदा क़ादिरे मुतलक़ (सर्वशक्तिमान) है। वह जो चाहे कर सकता है। वह तमाम कामों को केवल पलक के इशारे से कर देता है जो मानव शक्ति (इन्सानी कूवत) से बिल्कुल बाहर है अतः हिन्दू अक़ीदे के मुताबिक़ (हिन्दू विश्वानुसार) भागवान कृष्ण ने भी ऐसे बहुत से काम किए हैं जो इन्सानी ताक़त से (मानव शक्ति से) बाहर है। जैसे महाभारत में लिखा है कि उन्होंने जयद्रथ के रण भूमि से ग़ायब हो जाने पर दिन ही में सूरज गुरूब कर दिया था (अस्त कर दिया था) और फिर जयद्रथ के नमूदार यानी प्रकट हो जाने पर डूबे सूरज को उसके मारे जाने के लिए उसी दम रौशन भी कर दिया था। खुदा इन्सानों के लिए, ईश्वर मनुष्यों के लिए केवल सजदा करने मदहोसना करने, स्तुति और वंदना करने और पूजा किए जाने की चीज़ होता है। वो आबिदों और पूजा उपासना करने वालों पर रहम व बरकत की बारिश कर सकता है, दया और मांगलिकता की वर्षा कर सकता है। परन्तु वो मनुष्यों के लिए नमूना–ए–अमल अर्थात आदर्श (Ideal) नहीं हो सकता। लेकिन हज़रत इमाम हुसैन चूँकि मनुष्य थे इसलिए आप बनी नौअ़–ए–इन्सान (मानव जाति) के लिए नमून–ए–अमल थे (आदर्श थे) चूंकि आपने अपने

हर एक कार्य से इन्तेहाई इन्सानियत का इज़हार किया, सर्वोच्च मानवता का परिचय दिया, आपका हर एक काम इन्सानी जौहर का कमाल था, मानवीय तत्व की अन्तिम सीमा था, इसलिए आप मामूली इन्सानी (साधारण इन्सान) न थे, बल्कि इन्साने कामिल थे बल्कि एक पूण मनुष्य थे। और इन्सानियत के लिए नमून–ए–अमल थे। मानवता के लिए आदर्श थे। इस सभा में जो कि हमारे घर में हो रही है और जिसमें कि निमन्त्रित करने वाले सदस्यों में मैं एक अदना मेम्बर (तुच्छ सदस्य) हूं। मेरे लिए यह अवसर नहीं है कि मैं एक पूर्ण मनुष्य के विषय पर कोई लम्बा भाषण दूं। इस सभा में तो हम लोग बाहर से पधारे हुए अपने मेहमान उलमा (अतिथि विद्वानों) के भाषण सुनने के मुश्ताक़ हैं (ललायित हैं) मैं केवल प्रोग्राम के खाली समय को पूरा करने के लिए आपके सामने उपस्थिति हो गया हूं।

सज्जनों! हमारी मातृभूमि हिन्दुस्तान एक मज़हबी मुल्क है। (धार्मिक देश है) हिन्दुस्तान की रूह ने (आत्मा ने) ज़मान–ए–क़दीम (प्राचीन काल) से केवल धर्म पर विचार किया है और धर्म पर ही अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया है। हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के मुबारक दिल में इस सरज़मीन के लिए (इस धरती के लिए) प्यार था आपने कर्बला की लड़ाई की शुरूआत में ही मुसलमानों का खून बहाने और यज़ीद वालों की तबाही अर्थात् विनाश से बचाने के उद्देश्य से जिन तीन शर्तों को यज़ीद के सामने पेश किया था उनमें से एक में हज़रत ने हिन्दुस्तान में पधारने की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई थी (इच्छा व्यक्त की थी)। इसी हिन्दुस्तान में जहां उनकी शहादते अज़ीम (महान बलिदान) के तेरह सौ वर्ष बाद आज इस तारीख़ी (ऐतिहासिक) शानदार इमारत में आप उनकी बैनुल अक़वामी (यादगार सर्वजातीय) यादगार मना रहे हैं। मैं अपने भाषणें में मुतअद्दिद अनेकों बार यह बता चुका हूं कि हिन्दुस्तान में चार खास पज़ाहिब (विशेष धर्म) है जिनका कि अपना अपना ज़खीम (पृथक) लिटरेचर है। यहां का एक वह क़दीम तरीन (प्राचीन) धर्म है जो आर्य जाति के इस देश में आने से पहले यहां फैला हुआ था, और जो आजकल "सन्त–मत" के नाम से, पुकारा जाता है। गुरू गौरखनाथ, सन्त तुका राम, रामानन्द, कबीर, नानक सब इसी के पैरोकार हुए हैं। ओर इस समय आगरा का "दयाल बाग" अपटूडेट अखाड़ा माना जाता है। और दक्षिण में द्रविड़ के नाम से वहां की तमिल तेलगू आदि तेरह दक्षिणी भाषाओं में जिनका प्राचीन साहित्य भी मौजूद है और मोहन जोदड़ों और हड़प्पा की खोजबीन में जिसके कसीर अलामात बड़ी संख्या में (लक्षण) मिले हैं। दूसरा आर्यों का वैदिक धर्म है जो वेदों और संस्कृत साहित्य में मौजूद है जिसका अपटूडेट दावेदार दयानन्द सरस्वती का क़ायम किया हुआ आर्यसमाज है। जिसका साहित्य प्रकृति और संस्कृत भाषाओं में मौजूद है और चौथा बौद्ध धर्म है जिसका महावंश और जातक आदि महान साहित्य पाली भाषा में है जो तिब्बत, सीलोन, चीन, जापान, बर्मा और स्याम आदि देशों में इस समय भी शान के साथ रायज है (प्रचलित है)।

यह चारों हिन्दुस्तान के प्राचीन धर्म कर्मवाद यानी मस्ल–ए–तनासुख या आवागमन के मानने वाले हैं। इनमें "जैन" और "बौद्ध दो ऐसे धर्म हैं जो खुदा की हस्ती से तो मुन्किर हैं ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हैं परन्तु इन्साने कामिल या पूर्ण पुरूष के पुजारी हैं। वर्तमान हिन्दू धर्म जिसके अन्तर्गत आज सब हिन्दू चल रहे हैं। इन चारों मज़ाहिबों का मजमूआ हैं (चारों मतों का संग्रह है) चूंकि सन्त मत के महानुभाव हमेशा से तारिक़े दुनिया और फोक़रा कर रहे हैं। और उसका मज़ाक यानी रूचि केवल रूहानियत या आध्यात्मक में रही है। इसलिए वह आध्यात्मिकता के मुतलाशियों में हमेशा सीना दर सीना अर्थात

खोजियों में सदैव एक से दूसरे तक चलता रहा है। वह दुनिया दारी की समान व्यवस्था से हमेशा किनारे रहा है। परन्तु चूंकि शेष तीनों धर्म हिन्दुस्तान के राजधर्म (शाही धर्म) रह चुके हैं इसलिए इन तीनों धर्मों के उसूलों को लेकर यहां एक आम मज़हब की साख्त हुई थी, सामान्य धर्म का निर्माण हुआ था। वही हिन्दुस्तान का सामान्य धर्म अब हिन्दु धर्म कहलाता है। जैन, बौद्ध और वैदिक इन तीनों धर्मों की एक–एक खुसूसियत यानी विशेषता है। वैदिक धर्म की विशेषता ''यज्ञ'' ''और हवन''। जैन धर्म की विशेषता ''तप'' अर्थात ''व्रत'' ''त्याग'' और ''तपस्या''। रोज़ा, जुहद् और रियाज़त और बौद्ध धर्म की विशषता है ''दान'' अर्थात ज़कात व ख़ैरात। वर्तमान हिन्दू धर्म में यह तीनों विशेषताएं हैं। हिन्दू धर्म की साख्त अर्थात आकृति के बारे में स्पष्ट कहा गया है।

त्रियों धर्म स्कन्धः यज्ञ स्तपो दान मिति

अर्थात यज्ञ, तप और दान यह धर्म के तीन बड़े खम्बे हैं जिन पर हिन्दू धर्म की इमारत खड़ी है। वर्तमान हिन्दू धर्म की कोई ऐसी रस्म नहीं है जिसमें अगियार यानी कूछ न कुछ आग में सुलगाया न जाता हो। यह यज्ञ है। कोई ऐसी रीति नहीं है जिसमें ब्राहम्ण को भोजन या ब्राहम्ण को सीधा न दिया जाता हो। यह दान है। यही कारण है कि जैनों और बौद्धों की तरह वर्तमान हिन्दू धर्म भी ''इन्साने कामिल'' अर्थात ''पूर्ण पुरूष'' या ''पर्फ़ेक्ट मैन'' के सिद्धान्त को मानता है।

यह एक अजीब मज़ा है कि जब मैं हिन्दुस्तान के इन चारों मुमताज़ यानी प्रतिष्ठित धर्मों के अन्दर पूर्ण पुरूष के जो सिफ़ात बयान किये गये हैं (जो गुण बताए गए हैं) उनके साथ हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के मुबारक यानी शुभ गुणों को मुन्तबक़ करता हूं (मिलाता हूं) तो मैं हिन्दुस्तान की मज़हबी रूह के नुक्त–ए–नज़र से धार्मिक आत्मा के दृष्टिकोण से आपको पूर्ण पुरूष पाता हूं। और मेरा दिल हुसैनी अक़ीदत व मुहब्बत हुसैन[अ०] के प्रति निष्ठा और प्रेम से भर जाता है। मैं ज्यों–ज्यों आपके पाक अवसाफ़ व सिफ़ात, आपके पवित्र सद्गुणों पर विचार करता हूं तो आप मुझे हिन्दुस्तान की धार्मिक आत्मा का एक रौशन मुजस्समा (दिव्य प्रतिमा) दिखते हैं। और मैं आपको अपने मज़हबी जज़्बात से एक लम्हे के लिए भी नज़र अन्दाज़ करने में क़ासिर हो जाता हूं, अपनी धार्मिक भावनाओं से एक क्षण के लिए भी आपकी उपेक्षा करने में असमर्थ रह जाता हूं यही कारण है कि मैं यादगारे हुसैनी के इन बैनुल अक़वामी जलसों को अन्तर्राष्ट्रीय सभाओं को हिन्दुस्तान के क़ौमी इत्तिहाद के लिए राष्ट्रीय एकता के लिए अति शुभ समझता हूं। क्योंकि मुझे विश्वास है कि ज्यों–ज्यों हुसैनी सिफ़ात का मुतालआ और उन पर ग़ौरो खोज अर्थात हुसैन के गुणों का अध्ययन और उन पर चिंतन मनन किया जाएगा त्यों–त्यों हिन्दू मुसलमानों के मुन्तशिर जज़्बात एकजाई और मुतनफ्फ़िर मज़हबी रूह मानूस होती जाएगी, बिखरी हुई भावनाएँ एकत्रित और घृणित धार्मिक आत्मा एक दूसरे से हिल मिल जाएँगी। इसलिए मैं कहता हूं कि शुभ है वह दिमाग, वह मस्तिष्क जिनमें हुसैन[अ०] की सर्वजातीय यादगार की सूझ पैदा हुई।

सज्जनों यह विषय कुछ दार्शनिक है (फ़ल्सफ़ियाना है) क्योंकि क़दीम हिन्दुस्तान फ़ल्सफ़ियों का मस्कन था। प्राचीन भारत दार्शनिकों का गढ़ था। हिन्दुस्तान के दार्शनिकों ने मुत्तफ़क़ा तौर से सर्वमत से नजात, निर्वाण या मोक्ष को मनुष्य का इन्तिहाई हुसूल तस्लीम किया है। वरन उपलब्धि माना और यहां का हर धर्म अपने अलग–अलग तरीक़ों से यहां का प्रत्येक धर्म अपने अलग–अलग ढंग से मनुष्यों को नजात या मोक्ष पाने की तदबीर या युक्ति बताता है। चुनान्चे जैन धर्म जो अपनी तहज़ीब या सभ्यता

को वैदिक सभ्यता से भी पुरानी, वास्तविक और आधारभूत होने का दावा करता है, नजात पाने योग्य सम्पूर्ण पुरूष "कामिल इन्सान" के तीन गुण पेश करता है। उसका कथन है कि "सम्यक दर्शन ज्ञान चरित्रयाणि साक्षात्मोक्ष मार्ग" जिसका अर्थ है कि–

1. सम्यक दर्शन यानी सही नज़र Right Vision

2. सम्यक ज्ञान अर्थात सही इदराक व इल्म Right Knowledge

3. सम्यक चरित्रयाणि Right Character

इन तीन गुणों से सुशोभित मनुष्य "मोक्ष" प्राप्ति की योग्यता रखता है। आइये इस जैन सिद्धान्त को सामने रखकर ज़रा हुसैनी चरित्र का दर्शन कीजिए।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि हुसैन[अ०] को सही नज़र प्राप्त थी। यज़ीद को शाम व अरब के तमाम उलमा यानी धर्मशास्त्री मुसलमान समझ कर उसके हाथ पैर बैअत कर रहे थे और उनके मन मस्तिष्क पर जबकि यज़ीद छाया जा रहा था तब हुसैन[अ०] उसे मुसलमान नहीं बल्कि इन्सान कहलाने का भी अहल अथवा पात्र नहीं देख रहे थे। इसलिए कि आपको सही नज़र यानी सम्यक दर्शन (Right Vision) प्राप्त थी। हुसैन[अ०] जब कूफे वालों के बुलाने पर अपनी बीवी–बच्चों को बेसरो–सामान बिना किसी तैयारी के अपने साथ कूफे की ओर लेकर चलने को तैयार हुए तो हर समझदार व्यक्ति आपको रोकता था और आपकी ग़लती अथवा भूल बताता था परन्तु हुसैन[अ०] की अक़्ल और दृष्टि इसी को सही मार्ग समझ रही थी क्योंकि आपको सही "इदराक" सम्यक ज्ञान (Right Knowledge) प्राप्त था। हुसैन[अ०] के सही अखलाक़ सम्यक चरित्रयाणि का क्या कहना है किसी दुश्मन को भी कभी आपके अखलाक़ में (आपके आचार में) कोई रत्ती भर लग़ज़िश या फिसलन ढूंढे नहीं मिली। हालांकि उस समय के मोवर्रेख़ीन (इतिहासकार) सब मुख़ालिफ़ यानी विरोधी पार्टी के लोग थे। इसलिए जैन धर्म के दृष्टिकोण से हुसैन[अ०] अपनी जगह "इन्साने कामिल", "पूर्ण पुरूष" थे।

दूसरा बौद्ध धर्म है जिसने दुनिया के एक तिहाई मनुष्यों के हृदय को मग़लूब यानी परास्त कर रखा है। बौद्ध धर्म की रीढ़ आर्य स्टानिगक़ मार्ग है। भगवान गौतम बुद्ध ने चार असल व आलातरीन (चार मूल व उच्चतम) सच्चाइयों को देखा। और उनका अहसास व अमल उनका अनुभव और क्रिया क्या थी इन चारों में से चौथी सच्चाई पर जिसमें कि आठ गुण हैं खुद क़ादिर होकर उन्होंने इस काम को हासिल किया था यानी स्वयं सक्षम होकर इस पूर्णता को प्राप्त किया था जिससे कि वह निर्वाण में पँहुचे और बनी नौअ इन्सान अर्थात मानव जाति के लिए उन्होंने निर्वाण यानी "नजाते कामिला" के प्राप्त करने की एक शाही सड़क ढूंढ़ दी। गोतम बुद्ध की देखी हुई वे चारों सच्चाइयां यह हैं:–

1. दुःख Suffering यानी अज़ीयत क्या है।

2. दुःख समोदय Origin of Suffering यानी अज़ीयत की क्या बुनियाद है?

3. दुःख निरोध (Destrunction of Suffering) यानी अज़ीयत की तबाही व तख़रीब क्या है?

4. दुःख निरोध का उपाय (Noble Way of Destrunction of Suffering) यानी अज़ीयत की तख़रीब का सही रास्ता क्या है?

हम देखते हैं कि हुसैन[अ०] ने भी अपनी जगह पर चार मूल सच्चाइयों को देखा और उनका अहसास उनका अनुभव और जानकारी की थी। आपने देखा कि एक खुद्दारी व नफ़स परस्ती और शराब ख़्वारी यानी घमण्ड व स्वार्थ और मधु सेवन एवं लूट खसोट जिदाल व क़ेताल यानी मार काट और तबाही और बरबादी यानी

विनाश और क्षय, दुराचार और व्यभिचार, बीमारी और मौत ओर अन्त में दौज़ख अर्थात नर्क की आग मे जलना यह अज़ीयत या दुःख है। 2. एक ईश्वर की पाक यानी पवित्र ज़ात यानी हक़परस्ती और नेकी, सत्यवाद और उपकार पर ईमाने कामिल न लाकर पूर्ण विश्वास न लाकर हज़ारों वहमों में यानी भ्रान्तियों में फंसे रहना शिर्क, बुतपरस्ती अन्धी नफ़्स परस्ती व नाआक़बत अन्देशी यानी अनेकेश्वरवाद मूर्ति पूजा अन्धी आत्मा पूजा परिणाम का न सोंचना यह दुःख का आधार है। 3. खुदा शिनासी अर्थात ईश्वर बोध ईश्वर को पहचानना यानी तौहीद और नेकी परहेज़गारी व नफ़स कुशी व आखिरत पसन्दी क़नाअ़त व इस्तिग़ना ऐकेश्वरवाद, उपकार, सदाचार आत्म त्याग निस्पृहता आलोक प्रियता संतोष और यतीमों व मिस्कीनों और मुसीबत ज़दों यानी अनाथों व दरिद्रों व दुःखी लोगों की सहायता करना यह अज़ीयत की तख़रीब या दुःख निरोध है। रसूल[स॰] का बताया हुआ इस्लाम ही दुःख निरोध का सही रास्ता है।

भगवान गौतम बुद्ध ने दुःख निरोध का सही रास्ता जिस पर चलकर मनुष्य "पूर्ण मनुष्य" इन्साने कामिल (Perfect Man) हो जाता है अष्टागिक मार्ग यानी आठ गुणों का धनी होना महसूस किया था कैन आठ गुण?

1. सम्यक दृष्टि (Right Views) सही नज़रिया।

2. सम्यक संकल्प (Right Aspiration) सही आरज़ू या सही इरादे।

3. सम्यक वाचा (Right Speech) सही अख़लाक़ या सही कलाम यानी हक़ गोई।

4. सम्यक कर्मान्त (Right Conduct) सही अख़लाक़ या सही अफ़आल।

5. सम्यक आजीव (Right Livelihood) सही रोज़गार या सही मईशत।

6. सम्यक व्यायाम (Right Effort) सही वरज़िश या सही जोहद या सही कोशिश।

7. सम्यक स्मृति (Right Memory) सही हाफ़िजा यानी सही याददाश्त।

8. सम्यक समाधि (Right Contemplation) सही तसव्वुर या सही मुराक़बा।

जब हम महात्मा बुद्ध के बताए हुए इन आठों गुणों को हज़रत इमाम हुसैन में ढूंढते हैं तो हमें यह आठों गुण आपके चरित्र में प्रत्यक्ष रूप से मिलते हैं। उदाहरणार्थः—

1. हुसैन[अ॰] में सम्यक दृष्टि यानी सही नज़र थी। यह मैं पहले निवेदन कर चुका हूं (अर्ज़ कर चुका हूं) कि आपने जो कुछ देखा सही देखा जो वस्तु अन्दर बाहर से जैसी थी उसको वैसा ही देखा।

2. हुसैन[अ॰] में सम्यक संकलप यानी सही इरादा था। इसे भी मैं निवेदन कर चुका हूं। आपने अपनी जिन्दगी में जो भी अपने जीवन में निश्चय किया और जिस बात की आरजू की (इच्छा की)। आपका वह निश्चय (वह इच्छा) सही थी।

3. हुसैन[अ॰] में सम्यक वाचा यानी सही कलाम था। आप जो बोले सही बोले जिस मौक़े पर जिससे जो कहना ठीक और सही था वही और उतना ही आपने फ़रमाया। कहीं पर एक नुक्ता या एक बिन्दी भी कम या ज़्यादा या ग़लत नहीं फ़रमाया।

4. हुसैन[अ॰] में सम्यक कर्मान्त यानी सही अख़लाक़ था। इसे भी मैं पहले निवेदन कर चुका हूँ कि दुश्मन को भी आपके अखलाक़ में (आपके व्यवहार में) कभी कोई ग़लती ढूंढे नहीं मिली।

5. हुसैन[अ॰] में यह सम्यक आजीव यानी सही रोज़गार था। आपने गलत ढंग से रोज़ी नहीं कमायी बल्कि आपके वालिदे माजिद आपके पिता हज़रत अली[अ॰] ने तो बैतुलमाल यानी सरकारी कोष का मालिक होते हुए भी मज़दूरी करके यानी यहूदी के बाग में पानी सींच कर अपना

गुज़र बसर किया। वह बैतुलमाल को रिआया की दौलत (प्रजा का धन) समझकर उसे प्रजा की बहबूदी (प्रजा की भलाई) में ही खर्च करते रहे और हुसैन[अ०] की वालिदा यानी माता हज़रत फ़ातिमा[स०] चक्की पीसकर घरदारी की सेवा अपने हाथ से करके बसर करती थीं और खुली बात है कि बच्चा मां–बाप का निर्माण होता है।

6. हुसैन[अ०] मे सम्यक व्यायाम यानी सही वरज़िश या सही कोशिश थी। आपका कोई प्रयत्न कभी ग़लत नहीं हुआ। आप हमेशा शारीरिक एवं अध्यात्मिक दोनों कसरतें सही करते थे। एक तरफ़ जहाँ आप अध्यात्मिक (रूहानियत) में अदभुत थे वहां जिस्मानी बहादुरी और शारीरिक वीरता में अद्वितीय थे। आपने तीन दिन की प्यास और टूटे हुए मन की हालत में भी अकेले कर्बला में हज़ारों सिपाहियों के साथ अदभुत रूप से युद्ध किया। सम्यक व्यायाम यानी (Right Effort) का दूसरा अर्थ सही कोशिश या सही जोहद अर्थात सही प्रयास और सही संघर्ष भी हैं सही जेहद क्या है? यही कि अपने जान व माल से गरीबों, यतीमों की मदद करना सहायता करना। इबादत यानी नमाज़ रोज़ा के द्वारा दिल को पाक करना (हृदय को पवित्र करना)। नफ़स व गुस्से को जीतना (काम व क्रोध को जीतना) गुमराहों को नसीहत व नेक अखलाक़ के ज़रिये सच्चे दीन पर लाना।

7. हुसैन[अ०] में सम्यक स्मृति यानी सही हाफ़िज़ा या सही याद्दाश्त थी। आप कभी कोई बात, कोई वादा, कोई फ़रीज़ा, कोई वचन, कोई कर्त्तव्य कभी भूले नहीं। आप एक लम्हे के लिए (एक क्षण के लिए) कभी यह नहीं भूले कि आप ईश्वर के पास से आए हैं और अन्त में ईश्वर के पास जाना और तमाम उम्र के आजीवन के कामों का हिसाब देना है। आप हज़रत पैग़म्बर के नाती उनकी पाक गोद (पवित्र गोद) में खेले हैं हज़रत पैग़म्बर ने प्यार से आपके होंठ चूमे हैं और इस प्यार ही प्यार में आपने हज़रत पैग़म्बर को उम्मत (पैग़म्बर का पंथ) बचाने का वादा किया था (वचन दिया था) और आपके ऊपर इस्लाम के उसूलों अर्थात सिद्धान्तों की इन्तिहाई और सम्पूर्ण पाबन्दी की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। इसलिए नहीं भूले कि आप की याददाश्त दुरूस्त और स्मरण शक्ति ठीक थी। और सही हाफ़िज़ा (Right Memory) इन्सान–ए–कामिल की एक सिफ़त है। ''पूर्ण पुरूष'' का गुण हैं

8. हुसैन[अ०] में सम्यक समाधि यानी सही कल्पना एवं चिन्तन था। अपने माबूद या उपासक की याद न आप अपने नाना की मुबारक गोद में भूले न कर्बला की लड़ाई में नौ सौ घाव खाने के बाद, दुष्ट शिम्र की छुरी के नीचे। क्योंकि आप अपने ईश्वर से एक क्षण भी अलग नहीं हो सकते थे। यह आपके सही मुराकबे (शुद्ध ध्यान) की ज़िन्दा मिसाल है। मेरे विचार से कोई भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि हुसैन[अ०] इन आठों गुणों से मुनव्वर और सुशोभित नहीं थे जो बौद्ध धर्म की दृष्टि से पूर्ण पुरूष में होना लाज़िमी या अनिवार्य है।

जिस तरह से जैन धर्म और बौद्ध धर्म के विचार से हुसैन[अ०] पूर्ण पुरूष हैं उसी तरह आप हिन्दू विचार से भी पूर्ण और कामिल दिखते हैं। वर्तमान हिन्दू धर्म की सबसे ज़्यादा मुस्तनद (प्रमाणित) पुस्तक श्रीमद् भगवत गीता है। गीता भगवान कृष्ण का पवित्र वाक्य है। गीता में चार खास योग बयान हुए माने जाते हैं यानी 1. कर्मयोग, 2. ज्ञानयोग, 3. ध्यानयोंग या राजयोग, 4. भक्तियोग। हुसैन[अ०] में यह चारों योग हम उजागर पाते हैं कर्मयोग की तारीफ़ यानी व्याख्या में कहा गया है कि जो बिना किसी शख्सी बहबूदी की ख्वाहिश के अर्थात आत्मा कल्याण की इच्छा के मात्र धर्म या फ़र्ज़ की अदाई के लिए हर काम करता है वही कर्मयोगी है। साफ़ ज़ाहिर है कि हुसैन[अ०] का कोई काम आत्महित या अपने आराम के लिए नहीं हुआ। आपने जो

कुछ किया केवल धर्म के लिए दीन दुनिया की भलाई और बेहबूदी के लिए किया। यहां तक धर्म पर आपने अपने आपको कुरबान कर दिया (बलि चढ़ा दिया) इसलिए आप गीता के दृष्टिकोण से यानी गीता के नज़रिये के मुताबिक़ सच्चे कर्मयोगी थे।

आप ज्ञानयोगी भी थे क्योंकि आप परलोक और मृत्योपरान्त के जीवन को ही असली ज़िन्दगी समझते थे वास्तविक जीवन मानते थे। आप गीता की उस बात को भली भांति समझे हुए थे।

मतः परतर मान्यत् किंचिद स्ति धनेंजयः।

यानी एक परमेश्वर की पवित्र हस्ती के सिवा बाक़ी और सब बातिल है (असत्य है)। आप सच्चे हक़ शिनास यानी ईश्वर दर्शी थे।

हुसैन[अ०] ध्यान योगी या राज योगी भी थे। क्योंकि आप हर समय अपने ईश्वर से सम्पर्क रखते थे। किसी समय एक लम्हा (एक क्षण) भी उससे अलग न होते थे। यही गीता के राजयोग का निचोड़ है कि मनुष्य को पूर्ण युक्त अर्थात अन्तर्आत्मा से अपने पालनहार में पूर्ण रूप से मश्गूल यानी व्यस्त होना चाहिए। हुसैन[अ०] भक्तियोगी या पूर्ण भक्त थे। अपने ईश्वर या अल्लाह की मर्ज़ी अथवा इच्छा के लिए ही अपना सब कुछ तसद्दुक़ यानी न्यौछावर और कुरबान कर दिया था ईश्वर की उपासना के लिए आपने विशेष रूप से शुत्रु से एक रात की मोहलत मांगी थी और नवीं मोहर्रम की पूरी रात जो कि आपके जीवन की अन्तिम रात थी आपने केवल उपासना में व्यतीत की।

इन चारों योगों के अलावा भगवान कृष्ण ने गीता में अपने अत्यंत प्रिय व सिद्ध भक्त के गुण भी बयान फ़रमाए हैं। यह गुण गीता के बारहवें अध्याय यानी बारहवें बाब में बयान हुए हैं। तीन श्लोक प्रस्तुत करता हूँ:-

अद्वेष्टा सर्व भूताना मेत्रः करूणा एवच।
निर्ममों निरहंकारः सम दुख सेखः क्षमी।। 13
सन्तुष्टः सतंत योगी यतात्मा दृढ़ निश्चय।
मय्यर्पित म्रनो बुद्धिःयो में भक्तः क्षुमेजियः।। 14
यस्मान श्रेदि जते लोको लोकात्रो द्विजते चायः।
हर्षां मर्ष भयो द्वेगे मुर्क्तः यः सच म्रे प्रियः।। 15

(गीता अध्याय 12)

इन श्लोकों में भगवान फ़रमाते हैं कि जो किसी से बुग्ज़ व कीना यानी बैर ओर कपट नहीं रखता जो सबका मित्र और साथी है जो सब पर दया करता है, जो ममता मोह से खाली है जिसमें घमण्ड और अहं नहीं है जो दुख और सुख में सदैव एक समान रहता है जो क्षमा करने वाला है जो हर दशा में सब्र व शुक्र करता है यानी धैर्य से काम लेता है और ईश्वर का धन्यवाद करता रहता है जो योगी यानी हक़ अथवा सत्य में पूर्णतयः व्यस्त रहता है मसरूफ़ रहता है जिसने अपने मन यानी अपने को जीत लिया है जो श्रद्धा का पक्का है जिसने अपने दिल व दिमाग़ को ईश्वर के हवाले कर दिया है अर्थात जिसने अपना मन मस्तिष्क ईश्वर को समर्पित कर दिया है जो न स्वंय किसी से मुज़तरिब यानी व्याकुल होता है और न जिस से कोई दूसरा व्याकुल होता है और जो खुशी गुस्सा और ख़ौफ़ (प्रसन्नता, क्रोध और भय) के ग़ल्बों से यानी वर्चस्व से कभी परास्त नहीं होता ऐसा पूर्ण भक्त मुझे सबसे प्यारा है भगवान के प्रियतम पूर्ण भक्त के यह चौदह गुण जब हम हुसैन[अ०] के उच्चतम व्यक्तित्व में पता लगाते हैं तो हम आपको हर गुण से प्रकाशमय और पूर्ण पाते हैं।

इस प्रकार हुसैन[अ०] को जब हम हिन्दुस्तान के धार्मिक दृष्टिकोण से देखते हैं तो आपमें उन तमाम गुणों को नुमायाँ यानी प्रत्यक्ष रूप से पाते हैं जिनके होने से मनुष्य पूर्ण पुरूष या पुरूषोत्तम हो जाता है हिन्दुस्तान के 'योग दर्शन' और महाभारत के 'नारायणी धर्म' में इस बात पर काफ़ी तर्क प्रस्तुत किया गया है कि नर ही नर है यानी मनुष्य ही योग की विभूतियां व पूर्णता प्राप्त करके नारायण हो जाता है और वेदान्त भी

इस उसूल की तसदीक़ (इस सिद्धान्त की पुष्टि) करता है। मैंने जब मुसलमान उलमा यानी पण्डितों से पूछा कि क्या इस्लाम में भी इन्साने कामिल पूर्ण पुरूष के लिए कोई सिफ़ाती मेयार कोई गुणात्मक कसौटी बनाई गई है तो उत्तर मिला हां, पूछा कौन सा गुण जवाब मिला केवल एक पूछा कौन सा एक जवाब मिला, 'मासूमियत' त्रुटिरहित होना, अहा! मासूम यानी निष्पाप होना क्या जामे और पुर–मानी सिफ़त कितना सम्पूर्ण अर्थ सम्पन्न गुण है। इन्सानी हरकात मानव कर्म के केवल तीन वसीले यानी माध्यम हैं।

1. एक ख़्याल यानी विचार, 2. क़ौल यानी कथन 3. फेल यानी कर्म। मनुष्य कुछ सोचता है यह विचार है, मनुष्य कुछ बोलता है यह कथन है, मनुष्य करता है यह कर्म है। अतः मासूम–ए–कामिल यानी पूर्णतः निष्पाप भी तीनों तरह से मासूम ख़याल है, निष्पाप विचार है तो कभी गलत कल्पना न होगी, निष्पाप कथन है तो कभी ग़लत बात न कहेगा निष्पाप कर्म है तो कभी ग़लत काम न करेगा।

इस्लामी दृष्टिकोण से मनुष्य निष्पाप पैदा होता है। परन्तु सांसारिक भोग विलास आदि असुरी बर्चस्य से प्राप्त हो के मासूम या निष्पाप नहीं रहने पाता। हिन्दू दार्शनिकों ने भी आत्मा को 'नित्य शुद्ध–बुद्ध मुक्त स्वभाव' बताया है अर्थात आत्मा स्वभावतः अनश्वर पवित्र ज्ञान और मोक्ष प्रिय हैं।

आप देखें कि शुद्ध यानी पवित्र और शब्द मासूम एक ही माने रखते हैं, परन्तु हिन्दुस्तानी व इस्लामी दुष्टिकोण में थोड़ा सा अन्तर भी है और वह है कर्म वाद, यानी 'मसअल–ए–तनासुख़' आवागमन का प्रश्न। हिन्दुस्तान के दार्शनिक जीवन का प्रारम्भ अपने इस वर्तमान शरीर से ही नहीं समझते हैं। वह कहते हैं कि हम अत्यन्त प्राचीन काल से शरीर बदलते हुए अपने वर्तमान शरीर में मौजूद हैं। जस तरह मनुष्य फटे पुराने कपड़े पहन लेता है उसी तरह वह पुराने और अपूर्ण शरीरों को भी बदल कर नये शरीरों में चला आता है और नये शरीरों में आने के साथ ही अपने पिछले जन्म के संस्कार या विशेषताएं भी अपने साथ लिए आता है, नस्ले इन्सान यानी मानव वंश में स्वभाव की विभिन्नता का यही विशेष कारण है। स्वभाव पुरानी आत्मा के साथ उसी तरह रहते है जिस तरह बरगद के नन्हें से पोस्ते के बराबर बीज में विशाल बरगद का पेड़ छिपा होता है। इसलिए इन पुरानी विशेषताओं को नष्ट करके आत्मा की वास्तविक और स्वाभाविक विशेषता 'विशुद्धि' यानी मासूमियत को शरीर पर विजयी बना देना, मुक्ति का माध्यम अर्थात नजात का बाइस है। इसलिए यह सब सिफ़ाती मेयार यानी गुणात्मक मापदण्ड स्थापित हुए और उन्हें मार्ग या रास्ता कहा गया है। और उन्हें पार करने वाले मनुष्य को इन्साने कामिल अर्थात पूर्ण मानव बताया गया है।

इन सब की चर्चा से मेरा उद्देश्य केवल यह है कि जब हम हिन्दुस्तान के धार्मिक दृष्टिकोण से हुसैन[अ०] के पुनीत व्यक्तित्व (मुबारक शख्सियत) को गहराई से देखते हैं तो हर पहलू से आपको पूर्ण और कामिल पाते हैं और हम कह उठते हैं कि हुसैन[अ०] एक अनमोल हीरा हैं जिसे जिस पहलू से देखो बेऐब और बहुमूल्य है। हुसैन[अ०] वह सुदृश्य गुलाब हैं जिसकी हर पंखुड़ी अपनी सुन्दरता और सुगन्ध से खूबसूरती और खुश्बू से दिल को खींच लेती है। हुसैन[अ०] ऐसा खरा सोना है जिसे ज्यों–ज्यों तपाओ त्यों–त्यों उसका रंग निखरता जाता है। हुसैन[अ०] वह चमकता हुआ सूरज है जिसमें सभी रंग मौजूद हैं। और कर्बला की घटना एक ऐसा अलबम है जिसमें दुनिया की सभी व्यक्तिगत, परिवारिक और सामाजिक जीवन में उठने वाले प्रत्येक सवाल के सुलझावे की तस्वीर है। इसमें बाप बेटा, भाई बहन, पति पत्नी, यार दोस्त, रिश्तेदार नातेदार सबके फराएज़ और

सबके कर्त्तव्यों की हद बन्दी, सीमा रेखा का व्यावहारिक नमूना मौजूद है। इसमें धार्मिक और सांसारिक ज़िन्दगी का भी भरपूर नमूना व्यवहारिक उदाहरण मौजूद है। इसमें राजनैतिक समस्याओं और संघर्ष का भी स्पष्ट हल मौजूद है। अगर ध्यान से देखा जाए तो दीन दुनिया का कोई ऐसा सवाल नहीं है जिसे हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने अपने कारनामे से हल न कर दिया हो। हुसैन का कोई काम अधूरा नहीं है। हर काम पूरा है(कामिल है)। कामिल इन्सान पूर्ण पुरूष का काम कामिल और पूर्ण होता ही है।

वास्तविकता तो यह है कि कर्बला का युद्ध मुसलमानों का घरेलू झगड़ा नहीं है बल्कि मानव जाति के दो खास समुदायों की लड़ाई है। यह कहा भी जाता है कि हुसैन[अ०] के बहत्तर आदमियों की छोटी सी सेना में दुनिया के सभी ख़ास ख़ास नस्लों के लोग मौजूद थे। अगर हुसैनी सेना में प्रत्येक नस्ल के लोग थे तो यज़ीद की पल्टन में भी रहे होंगे। अगर यह सत्य भी है तो कर्बला की लड़ाई को मात्र मुसलमानों का गृह युद्ध नहीं कहा जा सकता। हुसैन[अ०] ने यज़ीद के सामने सच्चे मुसलमानों को प्रस्तुत करके उसे चुनौती दी कि ऐ यज़ीद! क्या तू सचमुच मुसलमान है? और घमण्डी और अंधे यज़ीद ने आपका पानी बन्द करके और अत्यन्त कष्ट देके अत्यन्त अत्याचार के साथ सच्चे मुसलमानों की हत्या करके यह सिद्ध कर दिया कि वह मुसलमान नहीं है। क्योंकि एक सच्चा मुसलमान दूसरे मुसलमान के साथ ऐसा अत्याचार नहीं कर सकता। फिर हुसैन[अ०] ने एक मृत्य प्रायः जांबलब, दूधमुंहे बच्चे को पेश करके यज़ीदियों से पानी की मांग की। और वह दूध व पानी से वंचित प्यासा बच्चा, तड़पता बच्चा, बेहद निर्दयता से अपने बाप की गोद में तीर का निशाना बना दिया गया। इस बात ने यह सिद्ध कर दिया कि यज़ीदी मनुष्य भी नहीं थे बल्कि मानवता से बाहर साक्षात पशु और पिशाक्ष थे। दूसरी तरफ़ हुसैन[अ०] ने अपना पानी उसी अत्याचारी सेना को यहां तक कि उनके ऊंटों और घोड़ों को भी पिला के अपने इन्सानी जौहर और मानवीय तत्व का कमाल और प्राकष्ठा दिखा चुके थे। यह सब बातें इस बात का प्रमाण हैं कि कर्बला की लड़ाई सत्य और असत्य की लड़ाई थी। पुण्य और पाप की लड़ाई थी। एक तरफ़ नेकी, ईमानदारी, तपस्या, दया, सत्यबोध और ईश्वरीय भक्ति है। दूसरी ओर बदी, धोखाधड़ी, वासना पूजा, अत्याचार अधियारा, आत्म पूजा अर्थात मदिरा पान और दुराचार और सभी असुरी विशेषताएं हैं। दोनों शक्तियों का संघर्ष है। उपरी तौर से यह लगता है कि बदी की जीत हुई। लेकिन नतीजा यह होता है कि यज़ीद का हमेशा के लिए विनाश हो जाता है। और हुसैन[अ०] सदैव के लिए ज़िन्दा यानी अमर हो जाते हैं।



दीन की तक़दीर

uny fgUnh

शाह की हमशीर है बिन्ते अली
दीन की तक़दीर है बिन्ते अली
अज़्मो जुरअत में सदाक़त है गवाह
हू–ब–हू शब्बीर है बिन्ते अली



ज़ैनब का बयाँ हू–ब–हू तक़रीरे अली है
ज़हरा की है तफ़सीर तो तनवीरे अली है
लो ज़ुल्म के ख़ैमों से धुआँ उठने लगा है
ये खुत्ब–ए–ज़ैनब है कि शमशीरे अली है



V8 Mhv lQ-ed cyZk

&t l0 l l0 l s,qy

हज़रत अली[अ०] इस्लामी जम्हूरी निज़ामे हुकूमत, (जन तांत्रिक इस्लामी शासन व्यवस्था) के आख़िरी ताजदार (शासक) थे। उनके ज़मान–ए–सल्तनत, (सत्ता काल) से पहले ''बनी–उमइया'' का गुट जिसको बनी हाशिम (हज़रत अली का वंश) से मौरूसी खानदानी अदावत, (वंशीय शत्रुता) थी। पस्ती के बाद उरूज और कमज़ोरी के बाद मुकम्मल कूवत व ताक़त हासिल कर चुका था यानी पतन के बाद उत्थान को पहुंच गया था और निर्बलता के बाद पूर्णतया शक्तिशाली एवं बलशली हो चुका था। यही वह गुट था जिसके हाथों रूहानियते इस्लाम, (इस्लाम की आध्यात्मिकता) अपनी ऊंची सतह से नीचे गिर गयी।

अली[अ०] के दौरे हुकूमत, (शासन काल) में इस गुट के सिरमौर अमीर मुआविया ने जो उस समय दमिश्क में गवर्नर के रूप में शासन चला रहे थे, अपने स्वाधीनता संघर्ष की शुरूआत की। वह अली[अ०] की मातहती, (अधीनस्था) में नहीं रहना चाहते थे। ''सिफ़्फ़ीन की जंग'' इस सिलसिले की एक कड़ी थी जो अली[अ०] को शाम के अमीर यानी प्रशासक से लड़ना पड़ी जिनकी पूरी कोशिश यह थी कि वह अली[अ०] की राज–सत्ता को कमज़ोर कर दें। चुनान्चे वह इस मक़सद (उद्देश्य) में कामयाब हो गये। अली[अ०] के बाद उनके बड़े बेटे हज़रत हसन[अ०] ने ज़मामे हुकूमत अपने हाथों में पकड़ी प्रशासन की बाग डोर संभाली मगर छः महीने से ज़्यादा हुकूमत न कर सके। और अमीर मुआविया से उनको सन्धि करनी पड़ी मगर उस सन्धि की शर्ते शाम के प्रशासक की तरफ़ से पूरी नहीं की गयी।

अमीर मुआविया के मर जाने पर उनका बेटा यजीद गद्दी पर बैठा। इस शख़्स का वजूद, (इस व्यक्ति का अस्तित्व) इन्सानियत (मानवता) के दामन पर एक बदनुमा धब्बा था। हज़रत मोहम्मद[स॰] रूहानी ख़िलाफ़त और दीने इस्लाम की लायक़े तक़लीद हुकूमत से इस शख़्स का दूर का भी तअल्लुक न था यानी हज़रत मोहम्मद[स॰] के आध्यात्मिक उत्तराधिकार एवं इस्लाम धर्म के अनुकरणीय प्रशासन से इस व्यक्ति का दूर का भी रिश्ता–नाता न था।

यह बड़ा अय्याश, विलासी और आज़ाद मनश यानी निरंकुश आदमी था। उसका ज़्यादातर वक़्त (अधिकतर समय) लहव व लअब (खेल कूद) में बीतता था। खुली बात है कि एक सदाचारी, नेककार इन्सान को ऐसे दुराचारी व्यक्ति से कोई दिलचस्पी व मोहब्बत, लगाव एवं प्रेम नहीं हो सकता। और उसकी सत्ता बनी नौए इन्सान यानी मानव जाति के लिए एक अज़ाब यानी यातना का दर्जा रखती है।

हुसैन[अ०] इब्ने अली[अ०], हज़रत मोहम्मद[स॰] के नाती थे और नेक किरदारी और हक़ परस्ती में

यानी सदाचारिता और सत्य–वादिता में सारे मुसलमानों के आध्यात्मिक गुरू, (रूहानी पेशवा) माने जाते थे। हज़रत पैग़म्बर[स०] के अकाबिरे तबाईन और पैरो यानी पैग़म्बर[स०] के बड़े अनुयायी जिनको ''असहाब'' कहा जाता है, हुसैन[अ०] का एहतेराम (मान–सम्मान) पेश–ए–नज़र (दृष्टिगत) रखते थे।

हुसैन[अ०] मरंजा मरंज अर्थात ''न दुखी करो न दुखी हो'' के सिद्धान्त पर जीवन बसर करने वालों में थे। उनका बेहतरीन मशग़ला विशिष्ट रूचि माबूदे बरहक़ सच्चे उपास्य ईश्वर को आराधना, इबादत और उसकी मखलूक़ यानी सृष्टि की खिदमत करना, सेवा करना था।

यज़ीद ने जन साधारण की तरह आपसे भी अपनी बैअत व इताअत की ख्वास्तगारी की यानी अपनी बैअत और आज्ञा पालन की मांग की। बैअत के मानी ''इस्लामी इस्तिलाह'', परिभाषा में यह हैं ''बैअत स्वीकार करने वाला स्वयं को अपने सारे धार्मिक और संसारिक कार्यों में उसका आज्ञाकारी बना देता है जिस आदमी की वह बैअत कर लेता है'' यह बिल्कुल साफ़ बात है कि हुसैन[अ०] जैसा धर्मात्मा, यज़ीद जैसे नाकारा आदमी की आज्ञापालन का बन्धन अपने गले में नहीं डाल सकता था। चुनान्चे जब आपसे बैअत की मांग हुई तो आपने साफ़–साफ़ अल्फ़ाज़ (स्पष्ट शब्दों) मे इन्कार कर दिया। मैं कहुंगा कि उनका ऐसा ही करना ज़रूरी था वरना वह हुसैन[अ०], हुसैन[अ०] न रहते बल्कि यज़ीद के एक मामूली गुलाम बनके रह जाते।

करबला की घटना की यह नीव थी। हुसैन[अ०] के इन्कार पर यज़ीद को बहुत गुस्सा आया और वह उनके क़त्ल का ख्वाहिश्मन्द, (इच्छुक) हो गया। वह अच्छी तरह जानता था कि गर वजूदे हुसैन[अ०] यानी हुसैन[अ०] का अस्तित्व दुनिया में बाक़ी रहा तो मेरी बदकिरदारी (मेरा दुराचरण) जगज़ाहिर हुए बिना न रह सकेगा। और मुसलमानों में मुझसे ऐसा तनफ्फ़ुर रूनुमा होगा यानी ऐसी घृणा पैदा होगी कि वह मुझे पलभर के लिए भी अपना हाकिम बना रहना गवारा न करेंगे।

हुसैन[अ०] को जब मालूम हुआ कि यज़ीद उनको क़त्ल कराने का इरादा रखता है तो वह अपने कुन्बे को लेकर जिनमें औरतें और बच्चे भी थे, अपने वतन मदीने से रवाना होकर मक्का पहुंच गये। जहां मुसलमानों की सबसे अज़ीम इबादतगाह (महानतम पूजा स्थली) ''काबा'' है। मगर यहां भी शान्ति अमन उन्हें दिखाई नहीं पड़ा। क्योंकि मक्का भी यज़ीद की हुकूमत, (राज) में था। आख़िर वहां से भी मंज़िल ब मंज़िल कूच करके, पड़ाव दर पड़ाव चलकर करबला तक पहुंच गये।

कूफ़े के नज़दीक एक वीरान रेगिस्तान, उजाड़ मरूस्थल को 'कर्बला कहते हैं। जिसके आस–पास भी कोई बस्ती न थी। यहीं हुसैन[अ०] ठहरे जिसका कारण यह हुआ कि कूफ़ा के प्रशासक इब्ने ज़ियाद ने एक हज़ार आदमियों पर सम्मलित फ़ौज का एक दस्ता इस गरज़ (उद्‌देश्य) से भेजा था कि वह हुसैन[अ०] को राह में घेर ले और कूफे में उसके पास ले आए। यह सैनिक टुकड़ी हुसैन[अ०] के साथ–साथ चलती रही और कूफ़ा पर जोर देती रही। मगर हुसैन[अ०] कूफ़ा जाने पर तैयार न हुए। यहां तक कि कर्बला पहुंच गये। अब यज़ीद के गवर्नर इब्ने ज़ियाद ने कूफ़े से कर्बला फ़ौजों को भेजना शुरू किया ताकि इस सरज़मीन (भूमि) पर एक फैसला कुन, (निर्णायक) लड़ाई हुसैन[अ०] से हो जाए।

10 मुहर्रम सन् 61 हि0 को करबला में इस हौलनाक (भीषण) लड़ाई की शुरूआत हुई। जिसको ''ट्रजिडी आफ कर्बला'' (कर्बला की त्रासदी) कहते हैं। इमाम हुसैन[अ०] की तरफ़ छोटे बड़े बहत्तर नुफ़ूस (72 जीव) थे और दूसरी तरफ़ चालीस हज़ार फ़ौज थी। इस घटना का सबसे

ज़्यादा अलमनाक (शोकपूर्ण) हिस्सा यह है कि यज़ीद की फौज ने लड़ाई के दो दिन पहले से हुसैन[अ०] की फौज वालों पर पानी की रोक लगा दी थी। "फरात नामक नदी जो हुसैन[अ०] के पड़ाव के नज़दीक ही मौजें मार रही थी, उस पर कड़ा पहरा बिठा दिया था और सचेत कर दिया था कि हुसैन[अ०] के पड़ाव में किसी तरह से भी पानी की एक बूंद न पहुंच सके।

यह युद्ध गर्मी के दिनों में हुआ था। अरब और इराक़ की गर्मी और कठोर ताप की जानकारी किसको नहीं। ऐसे मौसम में लगातार तीन दिन प्यासा रहना इंसानी रूह को कैसी अज़ीयत का बाइस होता है यानी मानव आत्मा के लिए कितना कष्टदायक होता है। इसको भली भांति समझ सकते हैं। ख़ुसूसन, (विशेषकर) ऐसे मासूम, (अबोध) बच्चों के लिए जो ज़्यादा कुवते बर्दाश्त (सहनशक्ति) नहीं रखते। मैं नहीं समझ सकता कि वह लोग कैसे संगदिल, (क्रूर) थे जिन्होंने अपने पैग़म्बर[स०] की आल व औलाद, सन्तान पर ऐसे ज़ोर–ज़ुल्म को जायज़ व रवा रखा था यानी उचित और न्याय संगत जाना था। अगर ऐसे मुक़ाम, (स्थान पर यहूदी और ईसाई, (जो इस्लाम के मुख़ालिफ़, विरोधी हैं) भी होते तो वह भी कमसिन अतफ़ाल, छोटे बच्चों और मुसीबत ज़दह यानी विपत्ति ग्रस्त औरतों की अल अतश अल अतश (हाए प्यास हाए प्यास) की आवाज़ को बर्दाश्त (सहन) न कर सकते।

10 मुहर्रम की सुबह से ही लड़ाई शुरू हुई और अस्र तीसरे पहर तक क़िस्सा तमाम हो चुका। बहत्तर, प्यासी–भूखी जानों को क़त्ल कर देना मुख़ालिफ़, (प्रतिद्वन्दी) की टिड्डी दल फ़ौज के लिए कौन सी बड़ी बात थी। लेकिन इस्लामी तारीख़ की वरक गरदानी और मुतालिआ से हम पर वाज़ेह होता है यानी इस्लाम के इतिहास के पन्ने पलटने और अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हुसैन[अ०] का प्रत्येक साथी तीन दिन की भूख–प्यास में ऐसे अन्दाज़ और जांबाज़ यानी ऐसी शैली एवं निर्भीकता से लड़ा कि दुश्मन के होश उड़ गये।

मानव जगत को कर्बला की त्रासदी ने ऐसे अनेक पाठ पढ़ाए हैं यानी आलम–ए–इन्सानी को सानिह–ए–कर्बला ने ऐसे मुतअद्दिद सबक़ दिए हैं जिनको न मैं भूल सकता हूं और न कोई इंसाफ परवर न्यायवादी हक़ीक़त शनास सत्यपरिचित इंसान भूल सकता है। हुसैन[अ०] ने दुनिया पर वाज़ेह, (स्पष्ट) कर दिया कि हक़ बातिल से मग़लूब नहीं होता अर्थात् सत्य, असत्य से पराजित नहीं होता। हुसैन[अ०] ने ज़ाहिर कर दिया कि सत्य पर मिटना ही इन्सानियत है। हुसैन[अ०] ने सिखला दिया कि ज़िल्लत (अपमान) की ज़िन्दगी से ग़ैरत (आत्म सम्मान) की मौत बेहतर है (श्रेष्ठ है)। हुसैन[अ०] ने बता दिया कि मज़लूम (अत्याचार पीड़ित) की आहों में इतनी कूवत व ताक़त (क्षमता और शक्ति) होती है कि ज़बरदस्त से ज़बरदस्त (प्रबल से प्रबल) हुकूमतों के तख़्ते पलट जाते हैं।

मैं प्रत्येक "क्रिश्चियन नाइट" को सीख देता हूं कि वह लड़ाई के मैदान में हुसैन[अ०] की तरह मुस्तक़िल मिज़ाज और साबित क़दम यानी दृढ़ निश्चयी ओर अडिग और मसायब पर साबिर यानी विपत्ती में धैर्यवान बना रहे। मैं सोंचता हूं कि अगर हुसैन[अ०] यज़ीद की बैअत कर लेते तो क्या ख़राबी पैदा हो जाती। यह बड़ा अमीक़ (गहरा) सवाल है। मुम्किन है हुसैन[अ०] यज़ीद की बैअत कर लेने के बाद कूछ दिन और ज़िन्दा रहते मगर उनकी यह ज़िन्दगी मौत से भी बदतर होती। इसलिए कि आपकी ज़िन्दगी का दूसरा नाम "इस्लाम की मौत" होता।

जिन लोगों को आपकी सदाक़त व हक़्क़ानियत यानी सच्चाई ओर सत्यवादिता पर भरोसा था वह हुसैन[अ०] के बैअत करते ही यह

¼cfd;k ist ua0 30 ij ————½

मुख्य समाचार

vkradokn fojks/kh jSyh lsljdkj D;ksaMj jgh g\$ dk;nsfeYyr ekSykuk dYcst okn udohh

6 flrEcj dks vkradokn ds f[kykQ gksus okyh jSyh ij ftyk iz'kklu }kjk yxk;h xbZ ikcUnh dh fuank djrs gq, efTyl smyek, fgUn ds tujy lsdszVjh dk;nsfeYyr ekSykuk l¸;n dYcst okn udohusdgk fd dHkh dksbZ t kfye ugh pkgrk fd ml ds t qYe dks [kqy dj nqfu;k ds lkeus iś k fd;k t k;s,d rjQ rks gekjk nśk vkradokn dh /kefd;ksa vkSj vkradokn dh /kkj i S lsijś'kku gS vkSj nwljh rjQ+vkradokn ds f[kykQ jSyh ij ljdkj ikcUnh yxk jgh gSA ;sfl QZbl fy, gks jgk gS fd D;ksfd ljdkj esa dqN vydk;nk t S heku fl drk j[kus okys us rk cSsgq gSA t ks vkradokn dh fgek;r djrs gS a;s jSyh ij vh nqfu;k esa gks jgh ng'kr xjnh ds fojks/k esFkh ft l esa eqyek uks ds vykok nwljs /keZ ds yksx Hkh 'kkfey gks jgs Fks A vr%,\$ h vkradokn fojks/kh jSyh ls ljdkj ;k ft yk iz'kklu dks D;ksa nq[k gSA ekSykuk us dgk fd iz'kklu ds l aśk esa dgk x;k gS fd vkius ikst ksVj esa ,\$ h rLohj D;ksa yxk;h ft l esa ekSykuk dks iqfyl ihV jgh gS ml lsyksxksa ds lkeus iqfyl ds f[kykQ x+qLlk iśk t k, xk vkSj iqfyl cnuke gksxhA vc iz'kklu viuus t qYe dks Hkh Nqikuk pkgrk gS vkSj mu dks Hkh ft uds }kjk ;g l aśk t kjh fd;k FkkA

ft yk iz'kklu ds }kjk t kjh fd;sx;s l aśk esa dgk x;k gS fd vkl Qh bekek cMs+ esa vxj ft ;knk yksx t ek gks s gS rks ml fcYfMa dks uqdlku igq¡pus dk [krjk gSA bl fy, jSyh ij ikcUnh yxk;h xbZ gSA ekSykuk us dgk fd ;g fl QZcgkuk ckt h gSA ljdkj pkgrh gS fd fdl hrjg bekek cMk+ ij dct k djys t ks ge fdl h Hkh rjg gksus ugh ansxsa pkgs ml ds fy, ;sfdruh Hkh dqcZkfu;k D;ksa u nsuh iM+s A ;gka bekek cMs+ esa i;ZVd vkrs gS t ks Nr ksa ij /kwe rs gS mu ij D;ks ikcUnh ugh yxkbZ t krh fd vf/kd i;ZVd vxj vk;sa rks bekek cMs+ dh Nr fxj t k, s dk [krjk gSA nj vLy bekek cMk+ vkl Qh lses reke vkSdkQ ls ljdkj dh lkykuk dj ksM+ks dh vkenuh gSA ljdkj ugh pkgrh fd ml dh cbekuh; kW lkeus vk; sA pqfd og fdl h Hkh rjg bekek cMs+ ij dct k djuk pkgrh gSA

ekSykuk us dgk fd ge bl jSyh dh rkfj[k dks vkxs c<+k jgs gS a vkSj gj gky esa ge ;g jSyh t : j djs xsa A vkt fl QZ jSyh ij ikcUnh yxk; st kus ds f[kykQ bekek cMk+ xqQ\+jku ev kc y[kuÅ esa reke myek dk ,gr s kt ht ylk gSA ft l esa vkxs D;k djuk ;g r; fd;k t k, sxkA ge usreke yksxksa dks y[kuÅ vkus ls jksdk fn;k gS vkSj og cl atksa jsyks esa vk jgh Fkh a ft ldh l s; k i kWp l kSl s vf/kd gks pqdh Fkh mUgsa Hkh euk fd;k x;k gS fd og jSyh ds fy, vkxs dh rkfj[k ds ,ykku gksus dk bUr s tkj djsa A

आातंकवाद के विरूद्ध होने वाली रैली पर प्रशासन की ओर से प्रतिबंध लगाये जाने पर प्रेस कानफ्रेंस

6 flraj 2014 dks vkradokn ds fo#) gks jgh jSyh ij çfrca/k yxk, t kus dh fuank ds fy, bekek cMk+ xqQ\+jkuekc y[kuÅ esa fofHkUu /keksZa dh çsl dkWUÝ sal dk vk;kst u gqvkA çsl dkWUÝsal dks lEcksf/kr djrs gq, dk;nsfeYyr ekSykuk l¸;n dYcst okn udohusdgk fd ft l rjg i wjh nqfu;k esa bLykeh dk ljdkjh vkradokn QSy jgk gS ml hrjg ;wih esa Hkh ljdkjh vkradokn QSy jgk gS ft l dh vxqokbZ dqN yhMj dj jgs gS a ft Ugksa us vkradokn fo#) jSyh ij çfrca/k yxk;k gSA ,\$ h ekufl drk j[kus okys yksa dks fl QZ +okV pkfg, pkgs oks vcwdj cxnknh l s feyus;k vydk;nk l sA bl jSyh ij bl fy, ifrca/k yxk;k x;k rkfd fgUnw eqLye yeku yM+s jgs avkSj f'k;k&lqUuh vkil esa >xM+s jgsa bu esa dHkh ,drk u gks ikls D;ksfd vxj bu esa ,drk gks xbZ rks oksV ysus eqf'dy gks t k;xkA

dk;nsfeYyr usdgkfd byD'ku [kRe gksusdscknge j§hdsvk;ksu dk,sykudjusvk$;s vkradoknfojks/kh j§hcM+sbekeckM+sgheagksxhA mUgksusdgkfd j§hdksblfy, jkdkx;k D;kfd oDQ laf'kks/kuij MhO,eO vk$,OMhO,eO dkukt+;t +dGkgSA vk$ gekjk fojks/k djuk mUgsacgkykx jgk FkkblfY, ck$kykdj mUgksusj§hdksjksdfn;kA j§hij byD'ku dehlkusjksdugha yxkbZ cfYd MhO,eO usvi uhcSBdfu;kWNqkusdsfy, ikcanhyxkbZ gSLokeh;kfraj vkua lajkskd l/kkwifj"kn usdgkfd tks'kSlku gksk gSoksviukdke djusdsfy, fdlhukfdlhdklgkjkyskgSvk$vkt 'kSlku bLykedklgkjkysdj iwjh nqfu;keaf[kykQ+Q§kjgkgSA bUgha'kSluhrkdrksadks;wiks dseqYd gfFk;kj vk$i$knsdj et cwr djrsgSA laxkj eatc Hkhdkbz vPNsdke dsfy, vkxsvkrkgSrks;gh'kSlku mldsfl[kykQ+[kM+kgkskgSA mUgksusdgkfd ge 'kSlku ls?kcjkusokysughagSApkgsoksfdlhHkh 'kDy eavk,A ;gh'kSlku ekSykukdYcst okn dsf[kykQ+[kM+kgSrkfd mudsdkekadksjksdk tkldsA mUgksusdgkfd ,$syksadksIRrkeavkusdkvf/kdkj ughagSt ksgjQ+kn ea 'kkfey gSA ftrusHkhnxsgqfl QZvkt e[kku dkukeD;kafy;ktkrkgSA muij ds$ gksk pkfg,]eqdnek pyukpkfg,A D;kvc ,$syksa gesatgc lae>k,axsAcze.klekt dsyhMj Lokehlkjax usdgkfd f'k;kvk$cze.klekt feydj ,$seap dhLFkkiukdjatksvkradokn dsfo#) bl dke dksvkxsc<k;sA ge dsay vkradokn dkfojks/k ghukdjacfYd bl ekufl drkdkHkhfojks/kdjatksvkradokn dslk;seaijoku p<hgSA dk;nsfeYyr ekSykuk dYcst okn usLokehlkjax dheap dhLFkkiukdjusdh;kstukdhljkguk dhvk$dgkge tYnhgh,$kear$kj djasftl eagj /keZdsyksx 'kkfey gksaxsA fl[klekt dsyhMj xqjehr flag usdgkfd j§hij ikcanhyxkdj ljdkj us'kfä dkçn'kZu fd;kgSA vkt iwjh nqfu;kvkradoknlst w jghgSvk$ljdkj vkradokn dsfo:) j§hij ifrca/kyxkjghgSA mUgksusdgkfd vkt e[kku f'k;kvk$lqUuhdsnjfe;ku nhokj[kM+hdj jgsgSA gktheqEen lyhl usdgkfd vkt e[kku usdHkhequyekukadhrtqekuhughadhoksgeskkuQjr ck/Vus dhfl;klr djrsjgsgSA mUgksusHkkjr ekrkdksMk;u dgkFkkrksoksdS$seqlyeku ;keqYd dsoQknkj gkslfdrsgSA vf[ky Hkkjrh; cze.klekt dsiáMr jktsazukFkf=ikBhusdgkfd dkbZrks,$kvknehgSt ks,d ykbyktcheklhdkbZjkt djusfudykgSblhfy, mudh eqf'kfyQ+ gksjghgSA ekSykukdYcst okn mlhMkDVj dkdke djjgsgSage crkukpkgrs gSafd iwjkcze.klekt mudslkFkgSge pkgrsgSafd tksyekadksf[kRe djfn;ktk;saekys xkoalsvk, lQhehj getk+usdgkfd vxj bl j§hij ifrca/kuyxkrkrksvaktke gksk fd vkradoknfojks/khj§heafdrus/keZdsyksx 'kkfey gksrsA dydUkklsvk, fot; ;kno h usdgkfd ge dYcst okn dsgkSysdksIykedjrsgSaft Ugksusiwjh gqdwer dksfgykdj j[k fn;kA ,d vknehlsiwjhljdkj fgyhgqbZgSvxj j§hgkstkrhrksljdkj dhD;kgkyr gkshA okSvkt e[kku dhcSBdfu;kalsinkZgVkjgsFksblhfy, cSBku rkd+samudsfo#) gksxbZAmUgksusdgkfd j§hij ljdkj dkifrca/kyxkukj§hdhdke;kchvk$ekSykukdYcs t okn dhtlr gSD;kfd ;sdke mudhrkd+ lsMj dj fd;kx;kAxkft;kckn dsdkthkS,'kgj [kyhd+vyt Q+ cjkWkhusdgkfd bl oDr+ geajk"VªLrj ij,d yhMj dht#jr Fkhftlsdk;nsfeYyr ekSykukdYcst okn usiwjkfd;kgSge mudslkFkgSA ge nwjs/keksaZ dslkFkfey dj vR;kpkj dsfo#) [kM+sgksaxsA mUgksusdgkfd vkradokn dhljijLrhvxj vejhdkvk$bljkbZy djrsgSarksvejhdkvk$bljkbZy dkslÅnhvjc tS$seqYd lkFkZ djrsgSaA tehr&,&vkyek,fgUn dsekSykukt kosn dkflehusdgkljdkj usviuh'kfä dkxyr ç;ksx fd;kgSvk$tkucw djj§hdksjksdkgSge lc ekSykukdslkFkgSavk$vkxs Hkh mudslkFkjgaxsA mUgksusdgkfd dksbZls'kjkc ihusokysgeabLyke D;k le>k,axsA ç$ dkÍ;$ eadydUkkdhefLtnsuk[kqnkdsbeke gktheqEen 'kQhd}ekSykuk vrgj vCckl dydUkk]ekSykukdkfic eqrck]ekSykukckfd} dktehekSykukgq§u egnh gq§uheqbZ ekSykukubZ vCckl ukSxkok]ekSykuktyky gSj fnYyh]ekSykuklQhgSj] y[kuÅ ekSykukvdcj vyheqbZ ekSykukbf'r;kd+gq§u lhrkiqj]ekSykukeftn jtk fprkSM+eqQ+uxj]ekSykukvdky jtkgfj;k.kk]ekSykuk'kkdlr vyhcukjl]blds vykok fofHkUu /keksadslaxBuksavk$cM+la[;keallqUuheqlyekuksausHkhf'kjdr dhA